ईशू - 1

अप्रैल - 2019

कॉमिक्स जंक्शन प्रस्तुति

जंक्शन प्लेनेंट

मैंगजीन

पुरानी हवेली

कैप्टन मॉरवल

रोबोट - 2.00

बर्फीली बिल्ली

प्रजाति

https://ComicsJunction.Stck.Me

https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

संपादक

उपेन्द्र राज

सह-संपादक

गौरव श्रीवास्तव

विशेष सलाहकार

बलविंदर सिंह

टीम जंक्शन

धर्मेंद्र शुक्ला,

विवेक आर्या "कश्यप",

सत्यम कुमार,

आकाश कुमार,

प्रेरित विशाल,

क्र. विषय सूची पेज नं.

सम्पादकीय ... ✍

नमस्कार मित्रो .....

सर्वप्रथम आप सभी मित्रो को होली की हार्दिक शुभकामनायें । आप सभी मित्रो का हमारे इस पहले संस्करण मे स्वागत है, हमारा यह एक छोटा सा प्रयास है बचपन की पुरानी यादों को ताजा करने की ।

उपन्यास/कहानियो से लेकर कॉमिक्स के सुनहरे खुशबूदार पन्नों का सफर करने के बाद अब अपने विचारो से आप सभी मित्रो को रू-बरू कराने का समय आ गया है । चंद मित्रो को छोड़कर शायद ही किसी की दिलचस्पी होती होगी कि बचपन मे बीता वो कॉमिक्स का हसीन दौर कैसा था, अक्सर गर्मी की वो चिलचिलाती धूप और शाम की वो शीतलता भरी रात जब हम परिजनो से छुपाकर कॉमिक्स का आनंद लिया करते थे, अक्सर विचारो मे कौध जाया करती है ।

पिछले कई सालो से हर रोज कोई ना कोई कॉमिक्स पढ़ता आ रहा हू और अपने इसी अनुभवो को आप सब तक पहुचाने का प्रयास कर रहा हू ।

इस मैंगजीन मे कई मित्रो की रचनाए शामिल की गई और कई मित्रो का सहयोग प्राप्त हुआ है, खासतौर बलविंदर सिंह जी (FMC) का धन्यवाद करना चाहूंगा जिनके मार्गदर्शन मे हम अपने इस प्रयास मे सफल हुए ।

हमारा ध्येय आप सभी मित्रो का मनोरंजन करना है और कॉमिक्स कल्चर को बढ़ावा देना है। आप सभी मित्रो से निवेदन है कॉमेंट के माध्यम से आप अपने विचारो से हमे अवगत अवश्य कराये जिससे हम अगले अंक मे और सुधार कर सके ।

आपके प्रतिक्रिया के इंतजार मे .....

आपका मित्र

Upendra Raj

The Surgical Strike Again

[एक और ऑपरेशन सर्जरी]

लेखक- विवेक आर्या "कश्यप"

सभी मित्रो को प्रणाम वैसे तो मेरा टॉपिक सिर्फ सुपर हीरोज पर कहानियाँ लिखना है, पर आज का टॉपिक असली सुपर हीरोज पर होगा, वह सुपर हीरोज है, जो हर पल हमारी रक्षा करते है ।

न तो 55 डिग्री सेल्सियस का थार का रेगिस्तान देखते है, न ही वे -45 डिग्री सियाचिन जैसी ठण्ड जगह की परवाह करते है । ये वो सुपर हीरो है, जो हर विषम परिस्तिथि में देश की रक्षा करते है । सियाचिन के बारे में एक विशेष बात बता दू, हम जैसे साधारण लोग सियाचिन जैसी ऊँची जगह पर साँस भी नहीं ले सकते है ।

अब आते है, मुख्य बहस पर कब तक हमारे जवान शहीद होते रहेंगे, दो देशो की राजनीती के बीच, और भी सिर्फ एक राज्य कश्मीर की वजह से । आये दिन कभी 10 दस सैनिक, कभी 40 सैनिक और अब तो हद हो गई सीधा हमारे पूरे बटालियन पर ही हमला कर दिया ।

इतनी हिम्मत इनकी, दरसल इनकी इतनी हिम्मत नहीं, ये हिम्मत तो इन्हे अपने ही देश में छुपे गद्दारो से मिली है, जो सरे आम पाकिस्तान जिंदाबाद और भारत विरोधी नारे लगते है ।

आतंकी ये बात अच्छे से जानते है, की अगर भारत में पकड़े भी जाते है, कोई चिंता की बात नहीं, कपिल सिब्बल , प्रशांत भूषण और राम जेठ मालाणी जैसे करोडे में खेलने वाले वकील तो उन्हें मुफ्त में मिल जायेंगे । तो भैया ऐसा करो अपना बोरिया बिस्तर उठाओ, और भारत पर हमला कर दो, तुम्हे फांसी से बचने के लिए तो कोर्ट रात में दो बजे खुलेगा ही खुलेगा ।

एक सर्जिकल स्ट्राइक से अगर पाकिस्तान के आतंकियों का पेट तो भरा नहीं, करो रोज एक सर्जिकल स्ट्राइक करो, रोज क्या? अगर पाकिस्तान के लिए हर मिनट भी सर्जिकल स्ट्राइक की जाये तो वो भी कम है, क्योकि पाकिस्तान कुत्ते की वो पूंछ है, जिसे सीधा करने के लिए अगर इंस्पात की पाइप भी डाल दी जाये तो शायद पाइप टेढ़ी हो जाये, पर कुत्ते की पूंछ सीधी नहीं होगी ।

अगर पाकिस्तान के औकात की बात की जाये तो, मैं पाकिस्तान की औकात एक पागल कुत्ते से ज्यादा कुछ नहीं समझता, और पागल कुत्ते का एक ही हश्र होता है, उन्हें गोली मार दो ।

कई देश भारत की समर्थन में आ चुके है, और प्रधानमंत्री ने भी सेना को खुली छूट दे दी, जाओ जैसे मामला हल कर सकते हो करो, उन्होंने 44 मारे और तुम 440 मारो, तभी हमारे सैनिको की आत्मा को शांति मिलेगी ।

अब बस प्रतीक्षा है, परिणाम आने की जब पाकिस्तान जैसे आतंकी देश का अस्तिव ही खत्म कर दिया जाये । क्योकि मुझे पाकिस्तान जैसे देश से शांति की कोई उम्मीद नहीं है ।पाकिस्तान जैसे देश का अंत ही सर्वसमाज का कल्याण है । पाकिस्तान का अंत ही दक्षिण एशिया में शांति ला सकता है । और हा सभी जवानो श्रद्धानंजलि, ईश्वर उन जवानो की आत्मा को शांति प्रदान करे जो हमारी रक्षा करते हुऐ, अपने प्राण त्याग दिए ।

यह जवान ही हमारे असली एवेंजर है ।

भारत माता की जय वंदे मातरम |

पुरानी हवेली
संपादन - उपेन्द्र राज
शब्दांकन - सत्यम कुमार
अहा ! एक और शिकार । अब तुम भी हम में से एक बन जाओगी......
आओ, अंदर आओ ! बाहर बहुत ठंड है......
जल्दी करो ! यहाँ तक आकर अब पीछे मुड़ना मुमकिन नहीं है.....
कांव !

भूतिया हवेली में तुम्हारा स्वागत है ।
मुझे यकीन है कि तुम्हे ये हवेली पसंद आएगी और तुम्हे अपनी पसंद के अनुसार कमरा भी मिल जाएगा ।
हर कमरे में दीवार से लगे हुए ढलानें है, और गर्म और ठंडी हवाएँ चलती रहती है ।
यहाँ, जैसा कि तुम देख सकती हो, ये हमारे मेहमानों में से कुछ की तस्वीरें है जब वे जीवित अवस्था में थे ।
प्लींज, कोई प्रकाश या तस्वीरें नहीं ।
हम आत्माओं को चमकदार रोशनी से भय लगता है......

हमें यहाँ इस आनंदमय भूतिया स्थान
पर रहना मुश्किल हो रहा था.....
......पर तुम्हारे आने से हमारा
अकेलापन खत्म हुआ ।
वह तुमसे मिलने
के लिए बहुत
उत्सुक है ।
शायद मैडम लियोटा तुम्हारी
मदद कर सकती है ।

तालाब के मेंढक, रेंगते और कुलबुलाते,
ये संगीत बजने पर सभी है सुन पाते !
जादूगर और चुड़ैले, जहाँ भी है बसते,
हमें घंटी बजाकर आभास है कराते !
हमारे सभी प्रेत दोस्त खुश है वे अपने मूर्त रूप धारण कर रहे है...... उन्होंने तुम्हारे सम्मान में एक बेहतरीन योजना बनाई है.......
........और वे तुम्हारा इंतजार कर रहे है ।

जब तहखानें के दरवाजों में चरमराहट और कब्रों में कंम्पन होती है, आत्माएँ कब्रों से बाहर आती है । अपने मूर्त रुप धारण करती है और गाने गाती है । आत्माएँ आनंदित होकर सामाजिक मिलन के लिए बाहर आती है !

आह !!
ओह, तुम यहाँ हो !
मुझे यह जानकर खुशी होगी, तुम अपने घबराहट को खत्म कर, हमारे साथ शोकगीत में शामिल हो जाओ ।
आखिरकार, ये तुम्हे हमारे नए सदस्य के रूप में स्वागत करने के लिए अपने कब्रों से निकलकर आए है.....
हालाँकि शायद इस घर मे अभी भी एक और के लिए जगह है......
समाप्त
कांव !

NEW YORK VS NEW DELHI

लेखक - विवेक आर्या "कश्यप"

नई दिल्ली से कुछ किलोमीटर दूर एक शांत शहर आज़मगढ़ । आज एक अज्ञात अट्ठाहस के साथ गूंज रहा है। हाहाहा ssss

परमाणु तूने मेरे सपने को तबाह कर दिया। मेरे हर एक लोगो को ख़त्म कर दिया। पर अब मेरे पास वह तकनीक, वह विज्ञान, वह मोहरा है जिसकी मदद से मै तेरा और तेरे उस टीन के डिब्बे प्रोबॉट को ख़त्म कर सकू |
मै आ रहा हूँ, परमाणु तुझे ख़त्म करने के लिए |

नई दिल्ली रात लगभग ११:०० बजे ।

हमेशा की तरह इंस्पेक्टर विनय अपनी ड्यूटी ख़त्म करके वापस घर जा रहे थे ।
पर सभी जानते है दिल्ली की एक तीसरी आँख भी है जो सेटेलाइट के जरिये पूरे शहर पर नज़र ररखती है **प्रोबॉट !**

प्रोबॉट -: हेलो विनय ।

विनय -: यस प्रोबॉट बोलिये ।

प्रोबॉट -: ध्यान से सुनो, कनाट पैलेस के पास सिटी बैंक के पास कुछ संदिग्ध लोग दिख रहे है । वहाँ जाकर देखो कुछ ठीक नहीं लग रहा है । मामला ठीक नहीं है ।

विनय -: ओके प्रोबॉट, मैं अभी चेक करता हूँ ।

और विनय जीप को कनाट पैलेस की तरफ घुमा लेता है ।

प्रोबॉट -: अरे विनय, क्या कर रहे हो ? ऐसे नहीं, परमाणु बन कर जाओ । तुम्हारी पुलिस वाली ड्यूटी तो कब की ख़त्म हो चुकी है ?

विनय -: (मुस्कुराते हुए) थैंक्स प्रोबॉट भले ही आप एक रोबॉट हो, पर आदत बिलकुल मामा प्रोफ़ेसर कमलकांत जैसे है ।

प्रोबॉट भी मन ही मन प्रसन्न हो उठते है ।

कनाट पैलेस रात ११:२५ मिनट
सिटी बैंक

स्टालिन जल्दी करो, बैंक का ताला तोड़ो, हमें बैंक मै डकैती करनी है ।

रुस्किल -: बस ये लास्ट ताला है। उसके बाद अंदर का सारा माल हमारा है| आखिर हम गैंग में पुरे २२ लोग है| और इस समय हम दिल्ली पुलिस तो क्या पूरी एक आर्मी की बटालियन से निपट सकते है|
ये लो बस आखिरी ताला भी चटका दिया, अब जो लूटना है, लूट लो|
सभी लोग अलग - अलग जगहों को लूटो, मैं लॉकर को हैक करता हूँ|

पूरा बैंक लूटने के बाद अपराधी भागने लगे| भागो इससे पहले की पुलिस आ जाये| सभी अपनी -अपनी गाड़ी में बैठ गए| और जैसे ही गाड़ी शुरू हुई, चलना छोड़ कर, हवा में सैर करना शुरू हो गई|

स्टालिन -: अबे रुस्किल हमारी गाड़ी हवा में कैसे पहुँच गई ?

जवाब कही और से आया - **इसे मैं उड़ा रहा हूँ परमाणु**

और परमाणु ने गाड़ी उठा कर पटक दिया, और अब-

परमाणु -: सुनो सीधा जेल जाओगे, या फिर पहले जेल अस्पताल और फिर जेल जाओगे ?

स्टालिन -: (गुस्से में) परमाणु बहुत सुना है, तेरे बारे में, पर आज के बाद दिल्ली वाले तुझे भूल जायेंगे, और स्टालिन की ऑटोमैटिक गन स्टार्ट हो गई।

परमाणु -: अपने क्राइम फाइटिंग के पुरे करियर में मैंने न जाने कितनी बार ये सुन लिया, प्लीज कुछ नया सुनाओ।

गोलिया चलते ही परमाणु एक तरफ कूद कर बचा और एक स्टालिन को जड़ दिया| तभी पीछे से रुस्किल राकेट लांचर से फायर कर दिया| राकेट बस परमाणु के चिथड़े करने वाली थी, क्योकि परमाणु इस वक्त और गुंडों से भिड़ने में व्यस्त था| पर एन वक्त पर प्रोबॉट ने परमाणु को ट्रांसमिट कर दिया, और राकेट लांचर परमाणु के कणो को आर- पार कर दीवारों से जा टकराया और दीवारों के चीथड़े हो गए|

प्रोबॉट ने परमाणु के कणो को सुरक्षित करके रिफॉर्म कर दिया |

परमाणु -: थैंक्स प्रोबॉट, अब इन्हे मै कोई मौका नहीं दूंगा|

प्रोबॉट -: ओके !

उसके बाद परमाणु जमकर सबकी मरम्मत की और सबको जेल पंहुचाया|

रात्रि २ बजे

आपका धन्यवाद प्रोबॉट, अगर आप न होते , तो शायद परमाणु जिन्दा न होता|

प्रोबॉट -: उसकी कोई जरुरत नहीं, कमलकांत ने मुझे इसलिए ही तो बनाया था| आज वो भले ही हमसे दूर है, पर उनका दिमाग मुझमे बसता है| अब घर जाओ, और जाकर आराम करो।

अगली सुबह

नयी दिल्ली पुलिस स्टेशन में गजब का बवाल हो रहा है। कमिश्नर दिलेर सिंह सबकी खबर ले रहे है तुम्हे पता है,विनय कल रात को क्या हुआ था ?
विनय -: हा सर पता है, कनाट पैलेस के पास सिटी बैंक को कुछ अपराधिओं ने लूटने की, पर सही समय पर परमाणु ने वहाँ पहुँच गया, और सारे अपराधी पकड़े गए।

कमिश्नर दिलेर -: शाबास विनय, शाबास, मैं तो तुम्हे काफी होशियार और समझदार समझता था | पर तुम भी औरो की तरह बेवकूफ निकले ।

विनय -: अरे सर, बताइये तो सही हुआ, क्या था ?

कमिश्नर -: जिस वक्त सिटी बैंक में चोरी थी | उसी वक्त दिल्ली म्युजियम में भी चोरी हुई, और चोर कुछ प्राचीन चीजों की चोरी कर ले गया |

विनय -: क्या ? पर सर ये कैसे हो सकता है ? म्युजियम के गॉर्ड और सिक्योरिटी सिस्टम को क्या हुआ ?

कमिश्नर -: चोर काफी हाईटेक था, सारे गॉर्ड तक को पता नहीं चला, सिर्फ कोई छोटा सा पत्थर चोरी हुआ है |

विनय -: पर सर कोई छोटे से पत्थर के लिए, इतना बड़ा रिस्क क्यों लेगा ? या तो बात कुछ और है या फिर | सर मैं अपने हिसाब से जाँच करूँगा ।

कमिश्नर -: वैरी गुड पर कब तक ?

विनय -: कह नहीं सकता, पर मुझे किसी काम से कही जाना है ।

मुझे प्रोबॉट से यह सब पूछना होगा । मुझे नहीं पता चोरी हुई, पर प्रोबॉट की नज़रो से दिल्ली की कोई भी हरकत नहीं छिप सकती यह सब सोचते हुए, विनय प्रोबॉट के पास पहुंचा ।

प्रोबॉट -: कुछ कहने की जरुरत नहीं है, मैंने तुम्हारी और कमिश्नर की सारी बात सुन ली है ।
तुम्हे याद होगा, कुछ दिनों पहले दिल्ली से बाहर एक उल्का पिंड गिरा था, और ये कोई साधारण पत्थर नहीं है उस पत्थर में इतनी ऊर्जा है, की अगले २०० वर्षो तक धरती को अकेले बिजली दे सकता है | पर इसे लैब की जगह म्युजियम में इसलिए रखा गया, ताकि किसी को कोई शक न हो | यह बात लोगो से छिपा कर रखी गई, पर चूक आखिर में हो ही गई | आखिर वो इतनी ऊर्जा का करेगा क्या ? और हा मैं तुम्हे इसलिए उस घटना को नहीं बता पाया, क्योकि किसी ने मेरे पूरे सेटेलाइट सिस्टम को कुछ देर के लिए जाम कर दिया था |

परमाणु -: कोई बात नहीं, जब तक कुछ पता नहीं चलता है, तब तक मैं विनय के रूप में जाँच पड़ताल करता हूँ, शायद किसी पुराने दुश्मन का कोई सुराग मिल जाये ।

AVENGERS TOWER

Ironman (Toni Stark) -: Hi Friday

फ्राइडे -: आपका स्वागत सर ।

टोनी -: और बताओ शहर में क्या हो रहा है ? सब कुछ ठीक तो है न ।

फ्राइडे -: हा सर अल्ट्रॉन से युद्ध के बाद लगभग सारे हीरोज छुट्टी पर है, अपराधी वैसे भी डर के मारे घर से निकलना नहीं चाहते | पर इतने दिनों के बाद आप टावर में कैसे ? फ़िलहाल अपराध का ग्राफ शुन्य है | छोटी - मोटी वारदातों को न्यूयॉर्क पुलिस संभाल लेती है ।

टोनी -: ओके बेबी, अच्छा बताओ हमारे स्टार्क इंडस्ट्रीज का क्या हाल है ? हमारे शेयर के भाव घटे या बढ़ा है ?

फ्राइडे -: सर आप तो जानते ही है ,की स्टार्क इंडस्ट्रीज को चुनौती देने लायक फिलहाल कोई कंपनी नहीं है | स्टार्क इंडस्ट्रीज हमेशा से बुलंदियों पर थी, और है | और हा सर आप के लिए न्यू दिल्ली से एक निमंत्रण आया है | किसी संस्था के उद्घाटन के लिए और गरीब और तकनीक मे माहिर बच्चों के लिए । ऐसे बच्चे जिनके पास ज्ञान तो है, पर आर्थिक संकट की वजह से आगे नहीं बढ़ पा रहे है ।

टोनी -: ओके फ्राइडे मैं न्यू दिल्ली जरूर जाऊंगा ।

तभी फ्राइडे चीख उठती है |

फ्राइडे -: सर ये न्यूयोर्क के आसमान मे क्या है ? शायद कुछ उड़ते रोबोट की सेना ।

इस समय आयरनमैन को न्यूयोर्क के आसमान पर होना चाहिए |

और फ्राइडे के अगली बार कुछ बोलने से पहले आयरनमैन न्यूयोर्क के आसमान पर रोबोट सेना के साथ था ।

आयरमैन To फ्राइडे -: फ्राइडे यकीन नहीं होता, छुट्टिया इतनी जल्दी ख़तम हो जायेंगी ।

आयरनमैन दायाँ हाथ और ब्लास्टर ने एक - एक करके रोबो सेना चिथड़े उड़ाने लगे | पर रोबो सेना एक बड़ी तादात में थी ।

आयरन मैन -: फ्राइडे जरा चेक करना, क्या इन रोबो सेना का कोई खास लीडर ये कोई कोडिंग तो नहीं है ।

अचानक रोबोट्स ने अपने विचार बदल दिए, ऐसा लग रहे था, जैसे इन्हे कोई दिशा निर्देश दे रहे हो | सब के सब आयरनमैन से लड़ने के बजाये, आर्म रिएक्टेर छीनने की कोशिश करने लगे ।

फ्राइडे -: सर मैंने जांच पूरी कर ली है, इन रोबोट्स के बीच एक खास रोबो है, अगर उन्हें ख़त्म कर दिया जाये तो, सभी अपने आप ख़त्म हो जायेंगे, और इनकी तादात यही रुक जाएँगी ।

पर ये कहते - कहते अचानक, जैसे फ्राइडे को किसी ने शटडाउन कर दिया ।

आयरन मैन -: फ्राइडे हेलो फ्राइडे क्या हुआ ? वो कौन सा रोबोट है |
लगता है, कुछ गङबङ है, अब जो करना है, मुझे अकेले ही करना है |

पहले इन रोबोट्स को स्कैन करता हूँ, अच्छा तो ये है, ये है वो खास रोबो, जो मुझ पर वार नहीं कर रहा है, यानि की मैं, अगर इसे ख़त्म कर दू, तो ये सारे ख़त्म हो जायेंगे ।

पर एकाएक सभी रोबोट आयरनमैन पर एक साथ टूट पड़े| मतलब अब खास रोबो पर वार करना तो छोड़ो उसे देख पाना भी मुश्किल है ।
पर तभी अचानक एक - एक कर रोबोट्स के ऊपर सुपर ब्लास्ट होने लगे और आयरन मैन के मुँह से एक नाम आया, रूडी [war Machine]

रूडी -: अब ये मत पूछना की छुट्टिया कब ख़त्म हुई ? जैसे तुम्हारी ख़त्म हुई, वैसे ही मेरी भी ख़त्म हुई ।
मुझे फ्राइडे ने इस बारे में सब बता दिया था | पर उससे संपर्क काट गया, कैसे मुझे नहीं पता ?
पर मुझे लगा, तुम अकेले ही इन सब से निपट लोगे | आखिर में तुम्हे मेरी मदद की जरुरत पड़ ही गई ।

आयरन मैन -: बात बाद में कर लेना, पहले योजना ध्यान से सुनो, मैं उस खास रोबोट पर निशाना लगता हूँ, और तुम इन मामूली टीन के डिब्बों को निशाना लगाओ |

War Machine -: ओके ओके टोनी !

और सब कुछ प्लान के मुताबित होने लगा ।

सॉरी रोबोट्स अब तुम लोग कही नहीं जा सकते । इतना कहने के साथ कंधे पर लगी गन और लेजर बीम ने रोबोट्स के चिथड़े उड़ाने शुरू कर दिए । और आयरन मैन को मौका मिल गया ।
तुम्हे मेरा रिएक्टर चाहिए न, ये लो । इतना कहने के साथ एक शक्तिशाली चेस्ट आर्म रिएक्टर वार ने खास रोबो के चिथड़े उड़ा दिए । और खास रोबो के खत्म होते ही बाकि के रोबो स्वत: ही खत्म हो गए ।

इस दुर्लभ नजारे को और अपने रक्षको को न्यूयोर्क वासी बहुत ध्यान से देख रहे थे । क्योकि उन्हें पूरा भरोसा था, उनके रक्षक हमेशा की तरह जीतेंगे ।
आयरन मैंन जिंदाबाद, वॉर मशीन जिंदाबाद ।

आयरन मैन -: रूडी अब टावर चलकर देखते, फ्राइडे को क्या हुआ ।

रूडी -: ठीक है ।

टावर पहुंचने के बाद

फ्राइडे -: सॉरी सर मुझे माफ़ कर दीजिए ।

आयरन मैन -: पर हुआ क्या, हमारा संपर्क कैसे टूट गया था ?

फ्राइडे -: मुझे नहीं पता सर, बस इतना पता है, की कोई अज्ञात आकृति टावर के अंदर, और उसके बाद क्या हुआ ? मैं नहीं जानती । और हा सर जब मैं अनलॉइन हुई, तो देखा सारे आर्म रिएक्टर चोरी हो चुके थे ।

आयरन मैन :- (रूडी से बोलते हुए) कुछ समझ रहे हो, रूडी वहाँ भी मेरा रिएक्टर छीनने की कोशिश हुई थी | पर

बंदा समझ गया था की वो मुझसे रिएक्टर नहीं ले पायेगा, तो शायद चाल बदल दी | और ये इतना एडवांस है, की फ्राइडे जैसी सुपर इंटेलिजेंस को भी शटडाउन कर दिया ।

रूडी -: चिल यार, छोड़ो खतरा ख़त्म, अब आगे देखा जायेगा ।

आयरन मैन -: फ्राइडे मेरी पैकिंग कर दो, मुझे कल दिल्ली निकलना है । और दिल्ली सन्देश भेज दो की कल मै आ रहा हू ।

फ्राइडे -: OK सर ।

आजमगढ़

ये तैयार हुई, सुपर स्टोन और आर्म रिएक्टर के संयोग से मेरा कातिल योद्धा, जो परमाणु और प्रोबॉट को ख़त्म कर देगा । पर अभी मुझे इसकी टेस्टिंग करनी होगी और टेस्टिंग कल दिल्ली आसमान पर होगा ।

नई दिल्ली, पुलिस स्टेशन

कमिश्नर दिलेर -: विनय कुछ पता चला उन चोरो के बारे में ।

विनय -: नहीं सर, चोर बहुत ही शातिर था । और उसका शायद कोई पुलिस रिकॉर्ड भी न हो, पर सर यकीन मानिये मैं जल्दी ही उसे पकड़ लूंगा ।

कमिश्नर -: हमें तुम पर पूरा भरोसा है विनय, पर एक काम और करना है ।

विनय -: क्या सर ?

कमिश्नर -: कल मशहूर वैज्ञानिक और सुपर हीरो टोनी स्टार्क उर्फ़ आयरनमैन दिल्ली यूनिवर्सिटी में आ रहे है, और हो सकता है वो तकनीक माहिर युवाओ को सम्बोधित करेंगे और स्कॉलरशिप की घोषणा करने वाले है ।
सबसे पहले तुम्हे उन्हें लेने एयरपोर्ट जाना है और उन्हें सुरक्षा देना है ।

विनय -: ओके सर ओवर एंड आउट ।

अगली सुबह 8 :00 बजे

इंस्पेक्टर विनय और कॉलेज प्रशासन टोनी का इंतजार करते है | और विमान आ चुका है, सभी यात्री एक-एक कर उतरते है, साथ में टोनी स्टार्क भी ।

विनय -: हेलो डॉक्टर, हम आपकी सुरक्षा के लिए आये है ।

टोनी -: (हसते हुए) ओके थैंक्स, चलो कोई तो है, दिल्ली मे मेरा कद्रदान |

दिल्ली यूनिवर्सिटी कैम्पस लगभग 9 :45 बजे, आज कैम्पस पूरी तरह से टोनी स्टार्क को देखने के लिए खचाखच

भरी हुई थी।

स्टेज पर एंकर -: दोस्तों आज हमारे बीच एक महान वैज्ञानिक और एक महान सुपर हीरो, जिन्होंने कई बार धरती की रक्षा की, कुछ खतरनाक सुपर विलेन को हराया, अल्ट्रोन रेड आदि दुश्मनो को हराया है । मै चाहती हू कि वो स्टेज पर आये, और भारतीय छात्रों को सम्बोधित करे, जिससे वो उनकी तरह एक सफल इंसान बन सके ।

आयरन मैन स्टेज पर -:

टोनी -: नमस्कार दोस्तो ! अपने मुझे इस लायक समझा कि अपने मुझे दिल्ली बुलाया, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद |

इससे पहले की आयरनमैन अपनी बात पूरी करते दिल्ली आसमान पर भयानक गणगणाहत होने लगी और सभी दिल्लीवासीओ की नजरे उन जगहों पर टिक गई।

और लगभग १० सेकंड के बाद यह गढ़ गढ़ गढ़ाहट जमीन पर उतर आयी और मौत का तांडव शुरू हो गया।

कातिल रोबोट्स की सेना ने आम जनता पर हमला कर दिया ।

टोनी -: अरे यार, यहाँ भी वही मुसीबत ।

विनय -: टोनी सर, आप यहाँ से निकलिए |

टोनी -: ओके मै अपनी रक्षा कर लूंगा, पर तुम और लोगो को यहाँ से बाहर निकालो और अब बहस मत करना मुझसे ।

विनय -: सभी पुलिस वाले अपनी-अपनी पोजीशन लेले, और आम जनता गेट की तरफ भागे ।

तभी पीछे एक रोबोट पर विनय ने अपनी सरकारी रिवाल्वर से फायर की।

विनय -: (मन में सोचते हुए) इन रोबोट्स से विनय की सरकारी रिवाल्वर नहीं, सिर्फ परमाणु ही निपट सकता है । बस मुझे नजर बचा कर निकलना होगा ।

विनय ने परमाणु बनने के लिए एकांत जगह खोज ली |

आयरन मैन To फ्राइडे -: मेरा कवच सक्रिय करो ।

फ्राइडे ऑनलाइन -: सर आपका कवच तैयार है, सर ।

ऐसा दिल्लीवासिओ के साथ पहली बार है। उन्होंने पहली बार टोनी स्टार्क को देखा, और टोनी को आयरनमैन बनते देखा।

आयरनमैन तैयार

आयरन मैन -: बस करो टिन के डिब्बों, अब तुम्हारा भी वही हाल करूँगा, जो कल न्यूयोर्क में वहाँ के टिन डिब्बों का किया था, भंगार में बदलना ।

आयरन मैन के दोनों हाथो से निकले किरणों ने रोबो सेना के एक बार फिर चिथड़े उड़ाना शुरू कर दिए । पर शायद इस बार ये इतना आसान न था । सुपर स्टोन ने रोबोट्स की पावर को बढ़ा दिया था और रोबो के किये एक ही वार ने आयरन मैन का दिमाग ठिकाने लगा दिया ।

आयरन मैन -: फ्राइडे जाँच करके कुछ बता सकती हो ।

फ्राइडे -: सर इनमे कुछ खास तरह की स्टोन पावर है, और सबसे बड़ी बात इसमें हमारे ही आर्म रिएक्टर का प्रयोग हुआ है । मतलब समझ लीजिये, आर्म रिएक्टर वैसे ही पावरफुल है, पर स्टोन की पावर ने उसे और शक्तिशाली बना दिया ।संभल कर हमला कीजिये ।

आयरन मैन -: थैंक्स फ्राइडे, पर शायद कोई फायदा नहीं, मेरे लेजर और रॉकेट्स का इन पर कोई खास असर नहीं हो रहा है | क्या मेरी फ़ौज आयरन विज़न इनसे निपट सकती है ? क्योकि ये संख्या में ज्यादा है ।

फ्राइडे -: सर न्यूयोर्क से नई दिल्ली तक आयरन विज़न को पहुंचने में लगभग ४५ मिनट लगेगा, तब तक शायद बहुत देर हो जाएगी ।

आयरन मैन -: ओके भेजो, तब तक मैं इन्हे रोकने की कोशिश जरूर करूँगा |

आयरनमैन मन मे सोचते हुए, अगर ये वैसे ही रोबोट्स है, जिन्हे मैंने कल हराया था । एक खास रोबो को ख़त्म करके, तो शायद इस बार भी ।

पर तभी पीछे से आयरनमैन को रोबोट की टुकड़ी ने पकड़ लिया।

आयरन मैन -: अरे यार, जरा सा ध्यान भटकने पर तो चिपक गए, अब छुटू कैसे ?

तभी आयरनमैन का सामना एक आश्चर्य से हुआ । सभी रोबोट "परमाणु ब्लास्ट" से फटने लगे, आयरनमैन के मुँह से निकला, वंडर मैन परमाणु !

परमाणु के आणविक वार से सारे रोबोट एक-एक कर फटने लगे, पर परिणाम वही, जो आयरनमैन के साथ हुआ था । पर इतना मौका काफी था, आयरनमैन के छूटने के लिए ।

आयरन मैन -: जान बचाने के थैंक्स, परमाणु," तुमसे मिलने का मन था, पर इस तरह से सोचा न था ।

परमाणु -: तुम्हारा भी थैंक्स, दिल्ली को बचाने के लिए, अब इन्हे ख़त्म कैसे करे ? कुछ सोचना होगा । प्रोबॉट क्या आप मुझे इनकी कुछ विशेषताएं या कमजोरी बता सकते है ?

प्रोबॉट -: पहले ये जान लो, इन रोबोट्स में वही पावर है, जो कल चोरी हुआ था । और ये इस वक्त आयरनमैंन के आर्म रियक्टर के साथ जुड़ काफी खतरनाक हो गए ।

परमाणु -: तो क्या मैं ये समझू सारी की साजिश आयरनमैन की है ।

प्रोबॉट -: नहीं !

आयरन मैन -: सुनो परमाणु, मैंने तुम्हारी और प्रोबॉट की सारी बातें सुन ली, अब जवाब सुनो।

जवाब में आयरनमैन ने रिऐक्टर चोरी और न्यूयोर्क पर हमले की सारी बता दी । फिर परमाणु ने भी City Bank और म्युजियम में चोरी की घटना को बता दिया । अब समझे, दोनों एक साथ बोले ।

परमाणु -: आयरनमैन बचो, तुम्हारे पीछे एक आ रहा है ।

आयरन मैन -: ओके अब मेरी बारी है, बचो तुम्हारे पीछे ।

परमाणु -: ओके, ट्रांसमिट ।

आयरन मैन -: ये किधर गया ?

परमाणु रोबो आर्मी के पीछे रिफॉर्म होकर चेस्ट "परमाणु ब्लास्ट" कर दिया । और फिर वही पुरानी बात, आर्मी फिर खड़ी हो गई । प्रोबॉट कुछ सोचिये, कुछ करिये । एक तो इनकी तादात बढ़ रही है, दूसरे ये बार-बार री-जेनेरेट हो जा रहे है ।

प्रोबॉट -: मैंने जाँच शुरू कर दी है, थोड़ी देर में परिणाम बताता हूँ ।

आयरन मैन -: फ्राइडे, तुम्हे कुछ मिला ।

फ्राइडे -: नो सर, सब कुछ error !

थोड़ी देर में आयरनमैन और परमाणु रोबो सेना से पूरी तरह घिर गए। हम फंस गए ।

आयरन मैन -: परमाणु अब क्या करे ?

परमाणु -: जब तक प्रोबॉट जाँच पूरी नहीं कर लेते ।

शेष अगले अंक मे ......

कॉमिक्स परिचर्चा

आइये कॉमिक्स से नयी पीढ़ी का विकास करें !

मोहित शर्मा (Trendster)

कॉमिक्स काफ़ी सारी विविधता और किरदारों के साथ आती है. साथ ही कॉमिक्स का सबसे बड़ा फायदा किसी बच्चे (खासकर Slow Learners Or Differently Abled) के विकास मे होता है. सिर्फ बच्चे ही क्यों बड़ो को भी समान रूप से कॉमिक्स पढने का फायदा होगा. पर ज्यादातर अभिभावक कॉमिक्स को समय, पैसे, आदि की बर्बादी समझते है. जैसा की वो अब तक सुनते आ रहे है ।

उन्होंने कभी कॉमिक्स को खुद नहीं परखा जो सुन लिया वो मान बैठे. ये बहस तो लम्बी है कि कॉमिक्स को सिर्फ बच्चो के लिए क्यों समझा जाता है पर यहाँ मै आप सबका ध्यान कॉमिक्स से होने वाले एक बड़े फायदे की ओर करना चाहता हूँ. विकसित होते और निरंतर कुछ न कुछ सीखते मस्तिष्क को कॉमिक्स किस तरह विकास मे मदद करती है ।

कॉमिक्स एकलौता ऐसा Multimedia का साधन है जिसमे लगभग हर कोई आराम से अपनी सुविधा अनुसार चित्रों और कहानी को Relate कर सकता है और उनमे हो रहे Frame Wise Changes को समझ सकता है. ये खासियत बच्चो के दिमाग के विकास मे मदद करती है. क्या और किसी मनोरंजन के साधन मे है ये खूबी ?

अभिभावक अगर कॉमिक्स का सही तरीके और सोच से इस्तेमाल करें तो उनके बच्चो का बहुत बढ़िया विकास हो सकता है. साथ ही उनकी Creativity और Logical Approach भी विकसित होता है. बस कॉमिक्स चुनते वक्त उसके मैटर पर एक बार ऊपरी नज़र डाल कर उसे देख लें. कुछ बढ़िया कॉमिक सीरीज़ आपके बच्चे को बहुत अच्छी सीख दे सकती है.

यहाँ भी मै कहूँगा की अपने हिसाब से खुद कॉमिक्स चुनिये... हर बार की तरह सिर्फ दूसरो की मत सुनिये. कई अभिभावक और आलोचक शिकायत करते है की कुछ कॉमिक्स मे वयस्क दृश्य, बातें, खून-खराबा बहुत होता है. मेरा कहना ये है की सारी कॉमिक्स ऐसी नहीं होती, मनोरंजन के बाकी साधन जैसे टी.वी., इंटरनेट, पत्रिकाएँ यहाँ तक की अख़बार आदि भी इस मामले मे कॉमिक्स से कहीं ज्यादा आगे निकल गये है... और कम से कम कॉमिक्स मे अंत मे अच्छाई की बुराई पर जीत तो होती है... है ना ?

अब तक तो हाल ये है की साहित्यिक गलियारों मे बच्चो की चीज़ कहकर नकार दी जाने वाली कॉमिक्स को बाल साहित्य की श्रेणी तक मे जगह नहीं मिलती. तो क्यों ना नयी पीढ़ी से एक नयी शुरुआत की जाये जहाँ कॉमिक्स को भी साहित्य जैसा सम्मान मिले (***क्योकि कॉमिक्स के पीछे भी कई प्रतिभाएं दिन-रात मेहनत करती है***)

MARVEL STUDIOS

CAPTAIN MARVEL

MARCH 8

©2019 MARVEL

क्री के ड्रोन, मेरे पीछे पड़े है और मैं महीनों सेछिपती फिर रही हूँ। इसका मतलब......
......वे जानते है कि मैं कहाँ रहती हूँ। ये भी कि माँ और जो कहाँ है। अब और छिपना नहीं। चाहे जो कुछ भी हो जाएँ.......
Harpswell Islands Rd
EXIT 42 Little Island Rd
...मुझे उनकी रक्षा करनी होगी।
कैरोल? ये तुम्हें क्या...
तुमने वो सुना? लगता है जैसे जो की आवाज थी। अच्छा होगा तुम एक बार अंदर जाकर उसे जाँच आओ।
मैंने कोई आवाज नहीं सुनी....
फिर भी तुम चेक कर लो।

जब आप अपने परिवार के साथ होते है, तो आप नहीं चाहते है कि कोई विपत्ति आए--मतलब - आपके परिवार पर।
लेकिन हमेशा वैसा नहीं होता जैसा आप चाहते है......
एक और?
......मेरे जैसे लोगो के लिए तो बिलकुल नहीं।
माँ? जो? यहाँ थोड़ी समस्या है। लगता है कोई अपनी मौत से मिलना चाहता है।
ऐसा कोई नहीं जो मुझे हरा सके, बस.... तुम तब तक घर से बाहर न निकलना जब तक मैं तुम्हे ये न बताऊं कि खतरा समाप्त हो गया है.... ठीक है?
ओह, कैरोल। मुझे भी तुम्हारी मदद, करने दो।
तुम यहाँ बाहर नहीं आ सकती! ये बात तुम क्यो नहीं समझती हो।
रूको, वीयर्स! मैं इसे सँभाल सकती हूँ!
साथ ही.....
THE LIFE OF CAPTAIN MARVEL
REGULAR EDITION
DM VARIANT
For the complete story, read
LIFE OF CAPTAIN MARVEL TPB
https://ComicsJunction.Stck.Me
https://www.facebook.com/Comics.Junction.CFS

भेड़िया का जीवन परिचय

प्रकाशक सूचना
प्रकाशक राज कॉमिक्स
प्रथम प्रदर्शन भेड़िया (1996)
बनाया गया धीरज वर्मा
अंतरंग मित्र कोबी

भेड़िया (अंग्रेजी : Bheriya) एक काल्पनिक किरदार है, जो भारतीय कॉमिक्स प्रकाशक राज कॉमिक्स के प्रमुख महानायकों में से एक है। भेड़िया की रचना धीरज वर्मा ने दिसंबर १९९३ के दिनों में की थी।

वर्ष १९९७ को, भारत में पहली बार डिजिटल रंगों द्वारा कोबी और भेड़िया की कॉमिक्स प्रकाशित हुई।

उद्गम

तकरीबन पचास हजार साल पूर्व, वुल्फानो नामक एक गणराज्य हुआ करता था, जिसके निवासी बेहद विकसित प्रजाति के भेड़िया-मानव रहा करते थे, जो शक्तिशाली होने साथ दोपाए चलते भी थे। उनके राजा वुल्फा भी एक भेड़िया-मानव थे, जिन्हें एक मानव कन्या, राजकुमारी सुर्वया से प्यार हो जाता है। वह मानव गणराज्य कोंकणी की राजकुमारी थी। वुल्फा अपने गुरुराज भाटिकी की तमाम हिदायतों के बावजूद जादुई वशीकरण माला के बल पर सुर्वया से विवाह कर लेते हैं और इस तरह दंपति को, कोबी प्राप्त होता है। पचास वर्ष गुजरते है और संयोगवश एक दुर्घटना में कोबी पर लगा वह शाप मिटता है और स्वयं को आसाम के जंगल में पाता है। फिर वह "भेड़िया" के नाम से एक नया जीवन आरंभ करता है। अब

भेड़िया की पहचान विशाल कद के साथ घने आयल, लंबी पुंछ और चमकदार आंखों से जाना जाता। वह बहुत शिद्दत से वनवासियों की सुरक्षा करता और बदले में वनवासी उसे भेड़िया-देव समझकर पूजा करते। सबका मददगार और अपराधियों के बीच काल के तौर पर लोग उसे "जंगल का ज़ल्लाद" के नाम से पुकारते।

भेड़िया अपने गुरु, भाटिकी, जो उसे लड़ाई लड़ना सीखाता है। फिर भाटिकी दो भागों में भेड़िया को "कोबी" (मोबोस उर्जा से उत्पन्न भेड़िया का पाश्विक भाग) और "भेड़िया" (फोबोस उर्जा से उत्पन्न भेड़िया का मानवीय भाग) में विभाजित करता है। भाटिकी अपने शिष्य कोबी को वापिस वुल्फानो चलने का आदेश देता है। मगर उनकी यह चेष्टा असफल होती है। इसी बीच मानवीय भाग भेड़िया और पशु भाग कोबी दोनों जेन से विवाह करने की कोशिश करते है, जिसमें कोई भी जंगल छोड़ने को राजी नहीं होता। इन 10 सालों में कोबी आसाम के जंगलों में निवास करते हुए, अपने इलाके को कई खतरों से बचाता है, मगर कई बार अपनी मूर्खता के चलते मुसीबत में फँसते भी है। भेड़िया तथा कोबी लगभग एक ही शरीर (मूल भेड़िया के साकार रूप में) के अंग होते हुए भी व्यक्तित्व स्वभाव में बिलकुल भिन्न हैं। जहाँ कोबी जाहिल, मूर्ख और उग्र स्वभाव का है तो वहीं भेड़िया व्यावहारिक तौर पर परिपक्व एवं बुद्धिमान है। आदिवासी भेड़िया का सम्मान करते और अपना रक्षक मानते, जबकि कोबी के गुस्से या कोप का भाजन बनने से बचने की प्रयास करते, हालाँकि कई बार कोबी जंगल में आई मुसीबत से भी बचाता, मगर सिर्फ अपनी शर्तों पर।[1]

शारीरिक संरचना (मूल भेड़िया): लंबाई- 8'0 भार- 154 kg. शारीरिक संरचना (कोबी): लंबाई- 8'0 भार- 138 kg. शारीरिक संरचना (भेड़िया - मानवीय भाग): लंबाई - 6'6 भार- 122 kg.

शक्तियाँ एवं क्षमताएं

कोबी अपनी अद्भुत दुम को अपनी इच्छानुसार लंबाई बढ़ा सकता है और वह इसका प्रबल हथियार के तौर पर उपयोग भी करता हो। वहीं अत्यंत खतरनाक परिस्थितियों में वह अपने भेड़िया देव का आह्वान करता है, जहाँ उसकी "मदद" स्वरूप एक घातक गदा प्रकट होते ही वह विरोधियों के परखच्चे उड़ा डालता है। जब कभी कोबी मदद के भेड़िया फौज को पुकारता है, तो क्षण भर में वह पूरा इलाका घिर जाता है। ये भेड़िए भी उसे अपना देव मानते तथा उसे पूजते। कोबी के पास अपनी "भेड़िया-मुख पट्टिका" जो उसे स्वस्थ होने की ताकत देता है मगर यह फौरन नहीं होता। असल में उसके पास ऐसी तीन दिव्य आभूषण है जो उसकी शक्तियों का स्रोत हैं; एक कंठहार, 2 कलाईयों के कड़े के जोड़े और एक भेड़िया मुख पट्टिका।

भेड़िया एक धुरंधर योद्धा है जिसे मूल कोबी की तरह ही विरासत में द्वंद्वकला की निपुणता हासिल है। भेड़िया कई प्राचीन कौशल तथा युद्धकला का जानकार है और उसने इसी बल पर कोबी को कई बार हराया भी है। कोबी और भेड़िया में हम स्पष्ट असामानताएं देख सकते हैं। भेड़िया बेहद बुद्धिमान, व्यावहार कुशल एवं मानवीय गुणों से परिपूर्ण है तो कोबी अपनी पशु बुद्धि, उद्दंडता, आक्रामक और गुस्सैल स्वभाव के कारण कुख्यात है। बावजूद दोनों ही गुरुराज भाटिकी की सिखाई द्वंद्वकला में माहिर हैं।

परिवार, मित्र और साथी (वर्तमान)

जेन - प्रथम भेड़िया की प्रेमिका होने नाते उसकी एकमात्र यह इच्छा है कि भेड़िया (मानव) और कोबी पुनः एक हो जाए। भेड़िया के जीवन में आने पूर्व वह बतौर एक फ्रांसीसी जासूस हुआ करती थी, लेकिन एक अभियान दौरान ही, वह आसाम के जंगल पहुँचती है और भेड़िया से उसे प्रेम हो

जाता है। जब कोबी और भेड़िया का आपस में विभाजन होता है, जेन अनमने ढंग से कोबी से विवाह कर लेती है, लेकिन उसका विश्वास है कि कोबी और भेड़िया एक ही आत्मा के दो भिन्न भाग है। वह चतुर, सुंदर, निडर स्वभाव की है और कई बार उसने भेड़िया की जान भी बचाई है।
गुरुराज भाटिकी - भेड़िया ने वह सभी युद्धकलाओं का प्रशिक्षण गुरुराज भाटिकी की संरक्षण में ग्रहण की है। वह बेहद शक्तिशाली होने साथ कई मामलों में, बेहद चालाक कूटनीतिक भी साबित भी हुए हैं। वुल्फानो के वह एकमात्र संस्थापक हैं, भेड़िया के मातृभूमि से दो खलनायक, कालनेमी और प्रेताल भी वहीं से आते हैं। उनका सिर्फ यही आकांक्षा है कि वुल्फानो का पुनर्निर्माण हो और कोबी व भेड़िया को वहां वापिस लाया जाए। भाटिकी वह एकमात्र शख्स है जिसने प्रथम भेड़िया को विभाजित किया।
फुज़ो बाबा - लोग उन्हें जंगल का संरक्षक कहते है। वह सभी जीवों, मानवों और जंगली जंतुओं का ख्याल रखते हैं। बहुत ज्ञानवान होने के साथ उन्हें सभी जीवों की भाषाएँ बोलना-समझना भी आता है। एक जमाने वह खतरनाक डाकू, फजीहत सिंह, के नाम से कुप्रसिद्ध थे मगर एक घटना के हृदय परिवर्तन से वह प्रकृति की सेवा में जुट जाते हैं। कई जानलेवा अभियानों में शह भेड़िया की सहायता करते। हालाँकि भेड़िया के इतने सम्मान और सहयोग देने पर भी, कोबी उसे अपना शत्रु समझता और "बुड्ढा-ठुड्ढा" कहकर कोसता रहता। जेन के लिए, वह पिता समान होने साथ वह पूरे जंगल के अभिभावक के तौर पर जाने जाते। जंगल का हर जीव उनका आदर करता है।

शत्रु एवं विरोधी

अपने पूरे जीवन भेड़िया और कोबी कई गैर कानूनी तस्करों, शिकारी एवं वन माफिया से भिड़ते रहें है। उनके कुछ प्रमुख प्रतिद्वंद्वियों तथा शत्रुओं के नाम जो शामिल है एलफांटो, तनतन्ना, अंधाधुँध, काईगुला, कालनेमी, प्रेताल, ग्रहणो, किंग लूना और निशानची।

अमर प्रेम श्रृंखला

राज कॉमिक्स ने कोबी-भेड़िया तथा जेन के त्रिकोणीय प्रेम को लेकर एक सिरिज जारी की, यहां इन तीनों के प्रति प्रेम और अतीत में हुए भेड़िया की अनकही प्रेमकथा के अंतर्द्वंद्व को लेकर बुना गया है। इस सिरिज की दो कॉमिक्सों (गुरु भोकाल एवं कोबी दक्षिणा) में उस घटना का भी उल्लेख है जहाँ कैसे भेड़िया अपने गुरुमित्र भोकाल द्वारा तिलिस्म भेदने का प्रशिक्षण ग्रहण कर दक्षिणा स्वरूप उनकी पत्नी तुरीन को वापिस छुड़ाता है। इसके उपरांत प्रेम आधारित श्रंखला का नाम "अमर प्रेम" (कॉमिक्स सिरिज) रखा गया तथा टैग लाइन पर इसे "काँटों भरा अंतहीन सफर" कहा गया। राज कॉमिक्स के इतिहास में यह अब तक की सबसे लंबी सिरिज के तौर पर जानी जाती। इस श्रंखला में मौजूद सभी इश्युओं के नाम क्रमवार किए गए हैं:

प्रेम ऋतु
कोबी प्रेम
गुरु भोकाल
कोबी दक्षिणा
अमर प्रेम
प्रेम बला
प्रेम ना खून
प्रेम हिरण
अवधूत
प्रेम पिशाच
प्रेम तड़प
प्रेम प्रतीक
प्रेम रत्न
प्रेम अश्रु

प्रेम श्राद्ध
वन रक्षक
शापित रक्षक
आहुति

लेखक

आरंभिक भेड़िया की कॉमिक्सों का लेखन व चित्रण धीरज वर्मा ही किया करते थे। लेकिन ज्यादातर पहले की कॉमिक्स और अभी तक का लेखन तरुण कुमार वाही (मुख्य लेखक) ही करते रहे थे। वर्ष १९९८ से वर्तमान तक, विवेक मोहन/संजय गुप्ता अपनी पटकथाओं के आइडिए को तरुण कुमार वाही को सौंपते और वाही जी उन पटकथा को कॉमिक्स के अनुरूप लिखते। साल २००८ से जारी अमर प्रेम श्रंखला की अधिकतर चित्रांकन आदिल ख़ान ने किया।

आर्टिस्ट

पहले भेड़िया की २ इश्यूओं का पूर्णतः चित्रांकन धीरज वर्मा ही किया करते थे, पर बाद में धीरज वर्मा पेंसिलिंग करने लगे, बाकी इंकिंग का काम राजेंद्र धौनी (वर्मा जी के छात्र) करने लगे। धीरज वर्मा ने वर्ष १९९३-२००२ तक भेड़िया कॉमिक्सों का चित्रित किया। हालाँकि वर्मा जी अस्थायी तौर पर २०००-२००१ तक काम पर नहीं थे, और २ माह बाद फिर वापसी भी की। उनके द्वारा छोड़ इस रिक्त स्थान पर, आर्टवर्क का कार्य नरेश के जिम्मे छोड़ा। धीरज वर्मा ने वर्ष २००२ के बाद स्थायी तौर पर राज कॉमिक्स से विदा ले लिया। मगर २०१३-१४ के आसपास उन्होंने कुछ निम्नलिखित कॉमिक्सों जैसे भेड़िया सिरिज की जलजीवनी, रक्तबीज; डोगा सीरीज की रावण डोगा एवं शुभस्य शीघ्रम तथा ब्रह्मांड रक्षक सीरीज की सर्वनायक अंक एवं आखिरी रक्षक में भी कार्य किया।

कथा , चित्र, स्याही एवम् रंग सज्जा -नवनीत सिंह   सम्पादन : ब्रम्हा पटेल   शब्दांकन : अर्जुन शर्मा

अबे चलो यार ! होली है कुछ हुड़दंग मचाया जाये !

चलिए चलकर उस पेटिभोभ तांत्रिक-मान्त्रिक घेंच को घेंचाया जाये ! बहुत बकैती करता है कमबख्त !

पर वो मिलेगा कहाँ ?

अरे मैंने पता लगा लिया है ! वो इस समय अपनी साधना में बिजी है।

अरे तो चलो जल्दी ! वहीं पकड़ के टमाटर और अंडे मारेंगे बौने को !

शिन

विवेकामौन

रक्षा

राय रोबो

कालपुत्र

ड्रीम कॉमिक्स एवम् ब्रम्हा पटेल प्रस्तुत करते हैं : **होली की हुड़दंग** भाग 2
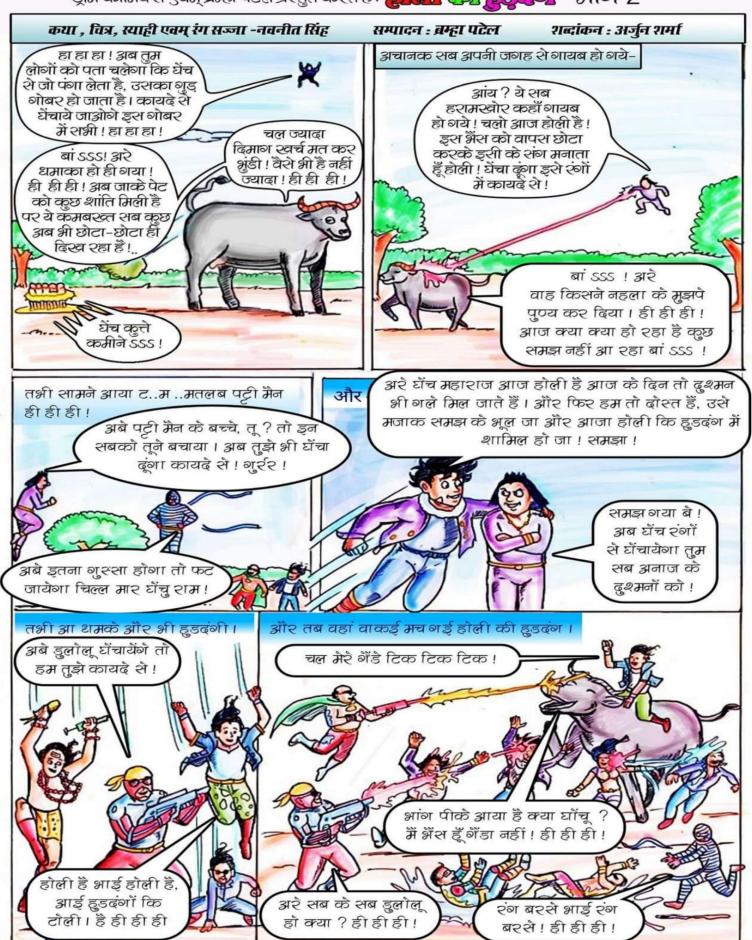
हैप्पी होली ,,, सभी को होली की बधाई ! तो भैया मचाओ हुडदंग होली पे !

हातिमताई

समीक्षक - उपेंन्द्र राज

हातिमताई की कहानी से आप सभी वाकिफ होंगे जिसमें शहजादी हुस्नबानो ने यह शर्त रखी कि जो कोई भी मेरे सवालों को पूरा करेगा, उसको मैं कबूल (स्वीकार) करूंगी। वह सात सवाल थे -

1. वह कौन सी चीज है जिसे एक बार देखा है, दूसरी दफा देखने की आरजू है!

2. नेकी कर दरिया में डाल, कौन कहता है?

3. बदी किसी से न कर - कर बुरा होगा बुरा।

4. सच कहने वाले को खुशी हासिल होती है।

5. कोहनिदा की खबर ला दे।

6. वह मोती जो मुर्गे के अंडे के बराबर है।

7. हम्माम बाग गर्द की खबर लाकर दे।

हातिम ने सातों सवालों के जवाब पूरे कर दिए थे।

अब एक किस्सा पढ़िए। हातिम कई दिनों तक बस चलता ही रहा और एक भयानक जंगल में पहुंचा। वहां उसे किसी के रोने की आवाज सुनाई दी। हातिम उस ओर चल पड़ा जिधर से आवाज आ रही थी। वहां पहुंचकर उसने देखा कि एक जवान सिपाही फूट-फूटकर रो रहा है। हातिम ने कहा - 'तू मुझे अपनी पूरी कहानी कह सुना।'

वहजवानकहने लगा - मैंएकसिपाही हूं। रोजगार के वास्ते अपने शहर से निकला था। राह भूलकर इस शहर में आ पहुंचा और बस्ती वालों से पूछने लगा कि इस बस्ती के हाकिम का क्या नाम है? किसी ने बताया कि इस शहर का मालिक मसखरा जादूगर है।

इस डर से मैं वहां से भागकर जंगल में आ गया लेकिन मुझे क्या पता था कि मुसीबतें यहां भी मेरा पीछा छोड़ने वाली नहीं हैं।

इत्तफाक से राह में एक बाग मिला जो बड़ा ही खूबसूरत और दिलचस्प था। मैं बाग के अंदर घूमने चला गया। अभी बाग के अंदर में चार कदम चला ही था कि इतने में सुंदर लड़कियों का एक समूह आया। उन सबने जरी के चमचमाते कपड़े पहन रखे थे। उन लड़कियों ने दौड़कर मेरे बारे में जादूगर की बेटी बताया और फिर मुझे एक मकान में ले गईं।

जादूगर की बेटी ने मुझे अपने पास बिठाया। इतने में ही उसका बाप मसखरा जादूगर बाग में दाखिल हुआ। वह पहले तो मेरे घोड़े को देखकर पूछने लगा कि यह घोड़ा किसका है? किसी ने डर के मारे उसे जवाब न दिया। इतने में दाई ने आकर कहा कि ऐ खुदाबंद करीम, शहजादी अब जवान हो चुकी है। यह मुसाफिर बहुत ही अक्लमंद है और किसी बड़े आदमी का बेटा मालूम होता है। बेहतर यही है कि तुम इसके साथ अपनी बेटी की शादी कर दो। तब उसने अपनी बेटी से पूछा कि तेरी मर्जी क्या है? उसने कहा कि मैंने इसे अपना पति स्वीकार किया।

जादूगर बोला - ठीक है मगर मेरी एक शर्त है। अगर यह मेरे तीन काम पूरा करदे तभी मैं इसकी शादी अपनी बेटी से करूंगा। मैंने पूछा कि वे तीन चीजें क्या हैं ? जादूगर ने कहा - 'जलपरी का एक जोड़ा, लाल सांप की मणि लाकर दो और खौलते घी के कड़ाह में कूदकर सही सलामत निकल आओ।' उसके इन तीन कामों को सुनकर मैं बहुत घबराया और तब से इस बियावान जंगल में पड़ा हूं।

हातिम ने कहा - 'ऐ जवान ! मैं खुदा की राह चलकर तेरी माशूका से तुझे मिला दूंगा।' फिर हातिम उससे विदा लेकर चला गया। थोड़ी दूर जाकर क्या देखता है कि एक किले में लोग बहुत सी लकड़ियां जमा करके उन्हें जला रहे हैं। पूछने पर लोगों ने बताया कि यहां एक जानवर बहुत आफत मचाने आता है और रोज दो-तीन आदमी खाता है। हातिम ने उस रात पहली बार वह जानवर देखा। उसके आठ पांव और सात सिर हैं। और वह हाथी, जैसा दिखता है। उसको तीन आंखें हैं। यह देखकर हातिम को ख्याल आया कि अगर बीच की आंख किसी भी तरह फूट जाए तो वह भाग जाएगा। और अगली रात ऐसा ही हुआ। हातिम ने एक तीर चलाकर उसकी बीच वाली आंख घायल कर दी। वह तड़पता हुआ भाग गया।

फिर एक दिन हातिम ने देखा कि एक सांप नेवले में लड़ाई हो रही है। दरअसल, वे दोनों

जिन्न थे। उनमें से एक की बेटी से दूसरा आदमी शादी करना चाहता था, पर वह नहीं कर रहा था। हातिम ने उन्हें समझाकर शांत किया। उस बेटी का बाप एक बादशाह था। इस सुलह से खुश होकर उसने हातिम को सुर्ख सांप की मणि दी।

अब हातिम जलपरी ढूंढ़ने निकला। वह एक दरिया किनारे पहुंचा। रात को वह वहीं सो गया। तभी अचानक वह जागा। उसने सुना दो जलपरियां (एक मादा और एक पुरुष) आपस में बात कर रहे हैं कि आज की रात हातिम नाम का एक आदमी आया है। वह हमसे मिलना चाहता है। इसके बाद वे दोनों हातिम के नजदीक आए। उन्होंने हातिम की दरियादिली की तारीफ की। फिर जलपरी ने बच्चों का एक जोड़ा हातिम को दिया। हातिम ने जलपरी का जोड़ा और मणि उस जवान को दे दिया।

अब तीसरी शर्त पूरी करने की बारी थी। मसखरे जादूगर ने अपने लोगों को बुला कर कहा कि एक लोहे के कड़ाह में घी भर कर भट्टी पर रखो और उसे तेज आंच में गर्म करके खौलावो। यह सुनकर जवान डरा और हातिम से कहने लगा कि इस कड़ाह के गर्म घी से मैं जीवित नहीं बचूंगा।

तब हातिम ने उसे दिलासा देकर कहा, तुम यह ताबीज अपने मुंह में रख लो और बेधड़क इस खौलते घी में कूद जाओ। उस जवान ने यही किया। तो उसे गर्म घी ठंडे पानी जैसा लगा। मसखरे जादूगर ने जब देखा कि जवान खौलते घी में नहीं जला तो बहुत खुश हुआ, और अपने शर्त और अपने रस्म के मुताबिक अपनी बेटी का निकाह उसके साथ कर दिया। मसखरा जादूगर जवान से बोला कि यह सारा मुल्क और धन-दौलत मैं तुझे अपनी बेटी के साथ के साथ देता हूं। इसके बाद हातिम अगली यात्रा पर चल पड़ा।
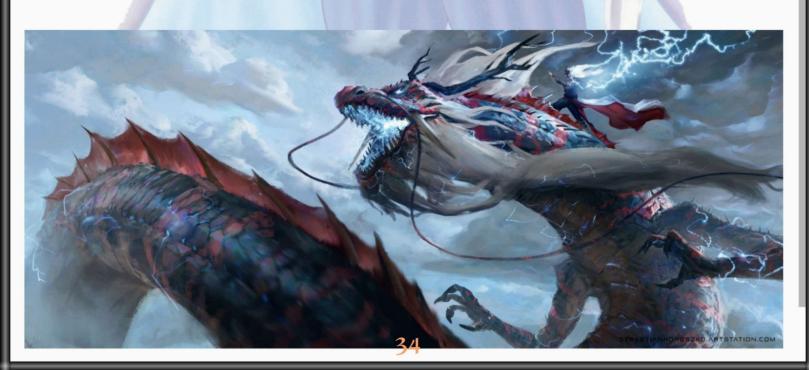
निष्ठुर

लेखिका - दिव्या राकेश शर्मा

"कान्हा, कन्हैया.......!"

कौन ?.....

गहन निंद्रा मे कान्हा को एक आवाज सुनाई दी।

"निष्ठुर मथुरा आ कर मोहे भूल गए"
मुझ से अच्छी तुम्हारी बाँसुरी है जो कन्हैया जिसको अपने नजदीक रखते हो......

"राधे ......राधे"..... व्यग्र से हो चारों ओर देखने लगे।

"कान्हा ! मैं यहाँ हूँ.".... कदम्ब के पेड़ के पीछे राधा नजर आई.
उजला सा मुखडा देख कृष्णा चौक गए.....

"राधे ये उदासी क्यूँ ? भुला नहीं हूँ राधे कर्तव्यों मे बंधा हूँ।
तुम तो मेरे अंतर्मन मे बसी हो।"

"कैसा अंतर्मन कृष्णा ? एक बार भी याद न करा, मुड़ कर देखा भी नही कि राधा जीवित है या मर गई! तुम्हारा प्रेम, प्रेम न था ...."

"वो सखा भाव भी न था। क्यूँ न देखा कि तुम्हारी राधा कैसे वियोग पल पल मरती है...... तुमने अपने कर्तव्य मे सब बिसरा दिया ?"

"सुनो राधे! मैं मानव रुप मे कर्तव्य से बंधा हूँ, प्रेम किया तुमसे ईश्वर बन, साधारण नहीं असाधारण बन । तुम्हारे प्रेम में अभिभूत हो मैं सबको प्रेम दे पाता हूँ ।"

"पर मैं असाधारण नहीं , साधारण प्रेम चहाती थी ।"

"राधे.....!"

सजल नेत्र लिए राधा दूर जा रही थी.........

उपवन महल मे बदल गया......

शैय्या पर लेटे कान्हा उठ बैठे.....

क्षणिक भावुकता के पल ......

"काश राधे मै साधारण मनुष्य बन पाता।"
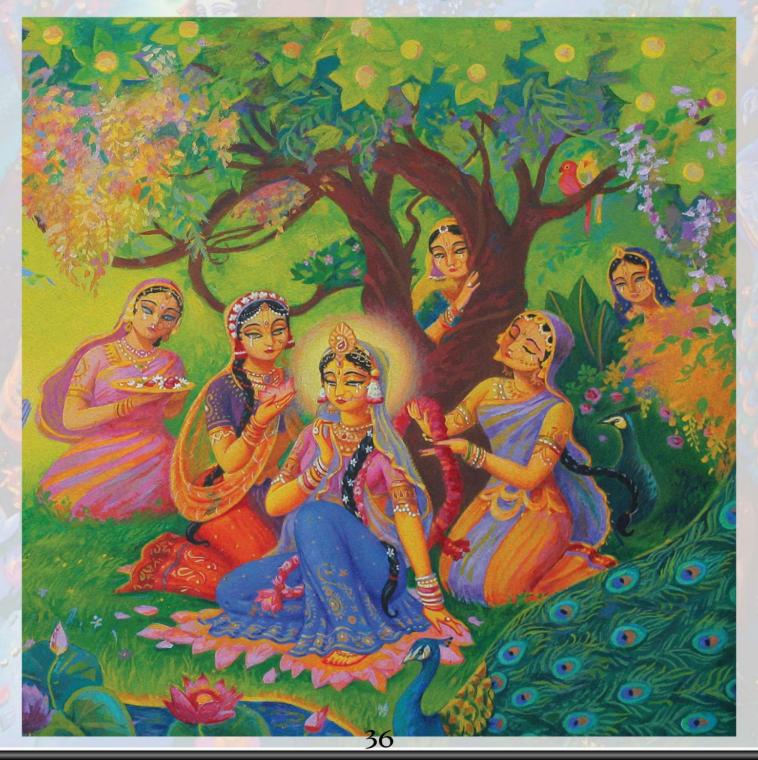
किड्स कॉर्नर

चित्र – आशू राजावत

संवाद – अभिषेक राजावत

विसर्पी का जीवन परिचय

जाति - इच्छाधारी नागिन
पिता - मणिराज
माँ - (विषप्रिया) नगीना
भाई - विषप्रिय, विषांक
कार्यक्षेत्र - नागमणि द्वीप
उद्देश्य - नागजाति व नागद्वीप की भलाई व रक्षण।
पब्लिकेशन - राज कॉमिक्स

विसर्पी जैसे अतिसुन्दर व मनमोहक नागिन की रचना तरुण कुमार वाही जी ने की थी । विसर्पी नागराज की कॉमिक्स "प्रलयंकारी मणि" से पदार्पण की थी ।।

शक्तियां और युद्ध कौशल -

विसर्पी इच्छाधारी नागिन है जिससे वह कोई भी रूप धारण कर सकती है व इच्छाधारी सर्पो की गुण रखती है ।। नागदंड की धारक होने के कारण विश्व के सभी नाग विसर्पी की आज्ञा मानने में बाध्य है ।।

विसर्पी कुछ वर्षो तक मुम्बई में पढ़ी है और उसी वक़्त आधुनिक बोलचाल, रहन-सहन और युद्ध कला से भी वाकिफ है ।।

संक्षिप्त कहानी

नागद्वीप इच्छाधारी नागो का एक द्वीप है, जिसे महात्मा कालदूत ने बसाया था, कालदूत ने एक योग्य नाग मणिराज को नागद्वीप का कार्यभार सौंपा ।।

मणिराज की शादी नगीना के दूसरे रूप विषप्रिया से हुई जिससे विषप्रिय और विसर्पी का जन्म हुआ । दोनों की जनम के बाद विषप्रिया नागद्वीप छोड़कर चली गयी ।।

वासुकि वंश में जन्मी विसर्पी का पालन-पोसन एक योद्धा की तरह ही हुआ था। बचपन

से ही विविध शास्त्रो को चलने में पारंगत हो चुकी थी। नागद्वीप की कुछ वर्षो पश्चात नागद्वीप में बाहरी मनुष्यो के आने के कारण व कुलदेवी की मणि चोरी करते हुए लुटेरे मणिराज की हत्या कर देते है और नागद्वीप को छोड़ का भाग जाते है ।।

मणिराज की मृत्यु का बदला लेने को विषप्रिय शहर जाता है मगर वह वहां मारा जाता है । नागराज वह मणि प्राप्त कर लेता है और मणि को नागद्वीप पंहुचा देता है । तभी विसर्पी और नागराज की पहली मुलाकात होती है और साथ ही मित्रता भी (**प्रलयंकारी मणि, शंकर शहंशाह**) ।।

नागराज विसर्पी को आधुनिक समाज में घुलने मिलने व ज्ञान प्राप्त करने के लिए बम्बई लाता है । बम्बई में विसर्पी आधुनिक ज्ञान व बोलचाल सीखती है (**नागराज और बुगाकु**) ।।

नागराज से धीरे धीरे मिलने व उसके प्रबल वीरता व आकर्षण से विसर्पी मन ही मन नागराज को चाहने लगती है । जब विसर्पी का स्वंयम्वर की घोषणा होती है तो कोई भी नागयोद्धा नागराज जितना शक्तिशाली व विसर्पी के पति बनने के काबिल नहीं होता । नागराज स्वंयम्वर जीत जाता है पर लंगारा जाति के सांपो के विद्रोह के कारण व नागद्वीप में सदा न रहने की विवशता के कारण नागराज नागद्वीप छोड़ देता है (**विसर्पी की शादी, शकूरा का चक्रव्युह**)।।

जिस वजह से विसर्पी नागराज से रूठ जाती है मगर विसर्पी और नागराज का प्रेम यहाँ खत्म नहीं होता । समय आगे बढ़ता है और विषाला के नागद्वीप से आतंक का सफाया करने के बाद से नागराज नागद्वीप में पुनः आना जाना प्रारम्भ कर देता है (**प्रलय**)।।

समय गुजरता है और विसर्पी का प्यार भी, और जब वह प्रेम बढ़ जाता है तो विसर्पी अपना राज-पाट छोड़कर नागराज के पास जाना चाहती है और शादी के बंधन में बंधना चाहती है । तब विसर्पी महानगर जाती है नागराज से मिलने तब उसका सामना तक्षक वंश की भारती से होता है । भारती और विसर्पी की यही से एक अटूट रिश्ता बन जाता है जब भारती उसे दीदी कहती है । इसी वक़्त नागराज के प्रति भारती के प्रेम का पता चलता है तो वह अपने रिश्ते पर सोचने पर मजबूर हो जाती है और शादी की बात को आगे नहीं बढाती (**फन**)।।

फिर से कुछ वर्षो बाद ही नागपाशा और गुरुदेव के षड़यंत्र के कारण नागद्वीप की बागडोर विसर्पी के हांथो से जाने ही वाली होती है तब महात्मा कालदूत नागराज व विसर्पी को शादी करने को कहते है मगर यहाँ भी शादी नहीं हो पाती । इसी दौरान नगपाशा और गुरु देव मणिराज के भस्म और नागपाशा के कोशिकाओ से शिशु का निर्माण करता है जिसके कारण

विसर्पी को विषांक के रूप में एक भाई भी मिल जाता है । तब तक वेदाचार्य नागपाशा के कोशिकाओ को तिलिसम के द्वारा नष्ट कर देता है और विषांक पूर्ण रूप से मणिराज का पुत्र बन जाता है (**त्रिफना सीरीज**) ।।

अब विसर्पी का सारा ध्यान अपने भाई के देख रेख पर होता है, इसी बीच वह नागराज से भी समय समय पर मिलती है । विषांक के थोडा बड़े होने पर जब विषांक का राज्याभिषेक होने की घोषणा होती है तब कालदूत विसर्पी की शादी की घोषणा करते है और विसर्पी की सगाई नागराज से कर देते है । मगर फिर भाग्य के उलट-फेर होने की वजह से तीसरी दफा नागराज और विसर्पी की शादी नहीं होती (**शेषनाग**) ।।

कुछ समय बाद कई आयाम के केंद्र बदलने के कारण नागरानी नामक एक इच्छाधारी नागकन्या दूसरे आयाम से महानगर आती है । नागरानी का सामना नागराज से होता है । नागराज से मोहित होकर नागरानी उससे शादी करना चाहती है मगर विसर्पी के हस्ताछेप के वजह से शादी संभव नहीं होता, परंतु नागरानी के आयाम में विष का संतुलन बनाये रखने के लिए नागराज की जरूरत होती है तब वेदाचार्य नागराज के अंश को नागरानी के गर्भ में स्थापित कर देते है । इस कारण विसर्पी नागराज से रुष्ट हो जाती है और अपनी सगाई तोड़ देती है और वापस नागद्वीप जाकर राजपाठ संभालती है (**फुंकार**) ।।

नागराज के कहानी के 3 भाग होने के वजह से
विसर्पी के रोल भी काफी हद तक बदल गया है ।

फीफी के सपने
ग्रेसी हवेली......
यहाँ सैकड़ो आत्माएँ निवास करती है ।
यहाँ हर किसी की अपनी एक अलग रोमांचक कहानी है ।
तो हम किसकी कहानी से शुरुवात करें ?
यहाँ हर जगह गंदगी और शोक
का माहौल है ।
संपादन - उपेन्द्र राज
शब्दांकन - सत्यम कुमार

इस शोकाकुल माहौल में आत्माएँ हर रात की तरह इस रात भी अपने कब्र से बाहर निकलती है, और उनमें से ही एक है.....

ऊहहह......
एक और बकवास और उबाऊ रात.....
फीफी

ची
ची
ची
पुरानी मक्खी की कब्र

आहहह ! इस तेज आवाज से मुझे पीड़ा होती है, तुम ऐसी तेज आवाज क्यों निकालते हो ?
फीफी

फड़
फड़
तो क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें गले लगाऊँ ?
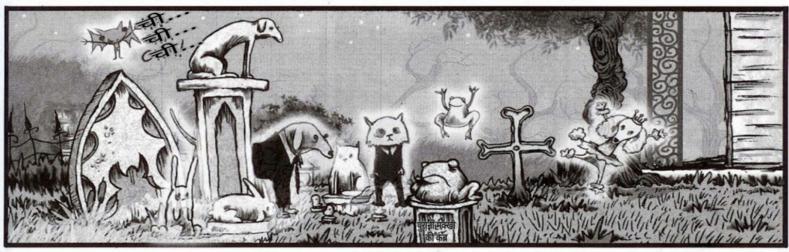
बकवास, बंद करो ! तुम्हारा हर रात का यहीं नाटक है । बस रोते रहना ! तुम मर चुके हो, फीफी । ये बात अपने दिमाग में डाल लो ।
इन पक्षियों को देखो, ये तो कोई शिकायत नहीं करते जबकि ये यहाँ इसलिए हैं क्योंकि मैंने इनका सिर चबाया था ।

मैं जानता हूँ कि मैं मर चुका हूँ......और मैं कोई शिकायत नहीं कर रहा, बस मुझे अपने मालकिन की बहुत याद आती है ! मुझे पता है कि वो भी मुझे याद करती है क्योंकि वो हर रात मेरे इंतजार में उस खिड़की से बाहर देखती रहती है ।
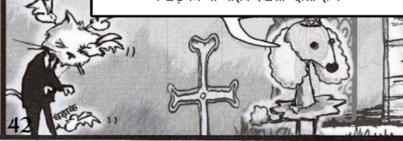
तुम जानते हो कि तुम दोनों फिर कभी एक साथ नहीं हो सकते। वो अंदर है और तुम यहाँ बाहर हो, अंदर मरने वाली आत्माएँ कभी बाहर नहीं आ सकती और बाहर मरने वाली आत्माएँ कभी अंदर नहीं जा सकती।

मतलब, मैं भी हर रात यहीं सोचती हूँ कि काश वो शरारती बंदर अंदर न मरा होता।
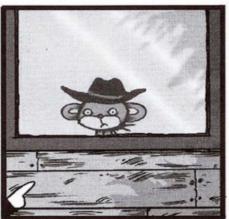
ओह, फीफी। अगर मैं अपनी सभी 9 जिंदगीयों का उपयोग नहीं कर ली होती, तो मैं अपनी एक जिंदगी तुम्हें दे देती। पर.....मेरे पास अब एक भी जिंदगी नहीं बची है। पहले घोड़ा-गाड़ी वाली दुर्घटना, फिर स्विमिंग पूल, आग, मलेरिया, उच्च विद्युत वाली तार, बहुत बड़े पक्षी को निगलने की कोशिश, बुरा वक्त, और.....फिर से बुरा वक्त।

क्या?

ये तो सिर्फ आठ ही जिंदगीयाँ हुई! तुम्हारे पास अभी भी एक जिंदगी बाकी है!
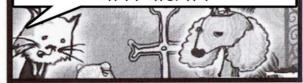
ओह.....मुझे नहीं पता कि मुझे पहले क्या करना चाहिए। शायद मैं पहले पहाड़ों पर चढ़ूँगी। या शायद मैं दुनिया भर में उड़ान भरने वाली पहली बिल्ली बन जाऊँ। शायद मैं अपनी 150 साल पुरानी अंडरवियर को बदल कर बिल्कुल स्वच्छ नई जोड़ी अंडरवियर लूँगी।

मेरे पास बहुत से विकल्प हैं। यह जानकर कि मैं इन द्वारों के बाहर की दुनिया को दोबारा देख सकुँगी, मेरी आंखों में खुशी के आंसू आ रहे है। मैं अब दुबारा से............

झटाक

मैं जिंदा हूँ !!

ओह, अपनी उतरी हुई शक्ल तो देखो, बुरी बिल्ली ! अब मैं उस घर के अंदर जा रहा हूँ और वहाँ मैं अपने मालकिन के साथ रहूँगा !
PFFFT

अब आप केवल यादों में रहकर मेरे दिल और आत्मा पर राज नहीं करेंगे.......

छन्नाक
मैं आजाद हूँ ।

हाँ, इस दरवाजे को खोलता हूँ और.......
टनाक

हा हा हा
तो......कैसा रहा तुम्हारा ये जीवन ?
चुप रहो ।
समाप्त !

मूवीं समीक्षा - कैंप्टन मार्वल

समीक्षक - गौरव श्रीवास्तव

अंतरिक्ष की एक अनजान बस्ती में अज्ञात कारणों से आ पहुंची वीयर्स को गुस्सा बहुत आता है। उसे पता है कि उसके पास कुछ अदम्य शक्तियां हैं लेकिन उन्हें अपने हिसाब से प्रयोग करना उसे नहीं आता। स्टारफोर्स उसे बताता है, एक योद्धा के लिए उसका सबसे बड़ा दुश्मन है उसका भावुक होना। वीयर्स उर्फ कैरल डेनवर्स उर्फ कैप्टन मार्वल को अपनी ताकत का एहसास होता है। धमनियों में दौड़ते नीले द्रव्य का भान होता है और हाथों से निकलते ऊर्जा पुंजों की शक्ति का अर्थ भी उसे समझ आता है। दर्शकों को समझ आता है मार्वल सिनेमैटिक यूनीवर्स में उसके आगमन का मतलब, फिल्म खत्म होने के बस कुछ मिनट पहले।

कैप्टन मार्वल का किरदार कर रहीं ब्री लार्सन और इस फिल्म को निर्देशित कर रही जोड़ी एना बॉडेन व रयान फ्लिक तीनों का इतने बड़े पैमाने पर बनी किसी फिल्म का ये पहला अनुभव है। ऑस्कर जीत चुकीं ब्री मानवीय संवेदनाओं वाले किरदारों के लिए जानी जाती रही हैं। कैप्टन मार्वल बनना उनके लिए आसान नहीं रहा है लेकिन फिल्म देखने के बाद ये भी समझ आता है कि इस किरदार के लिए उनसे बेहतर दूसरी अभिनेत्री शायद ही हो। सबसे शक्तिशाली सुपरहीरो के तौर पर वह खुद को दमदार तरीके से पेश करती हैं। हां, फिल्ममेकर्स शायद ये भूल गए कि ट्रेन की छत वाला स्टंट दर्शकों को जेम्स बॉन्ड कब का दिखा चुका है।

एवेंजर्स की टीम के हर सदस्य की कहानी शुरू करते समय मार्वल स्टूडियोज ने इस बात का ध्यान अब तक की सारी फिल्मों में रखा कि हर किरदार को करीने से गढ़ा जाए। उसकी शक्तियां भी अजूबा हों और उसकी कोई न कोई कमजोरी भी जरूर हो और साथ हो हास्य की ऐसी छौंक जो एक्शन से लबरेज इन फिल्मों के दर्शकों को बीच बीच में गुदगुदाती रहे। यहां ये काम फिर से निक फ्यूरी के जिम्मे है। 90 के दशक में रची गई इस कहानी के लिए निक फ्यूरी बने सैमुअल को कम्प्यूटर तकनीक के सहारे परदे पर जवान किया गया है। सिर पर बाल हैं। आंख पर लगा काला पट्टा गायब है। और, निक फ्यूरी किसी भी दूसरी फिल्म से ज्यादा आकर्षक दिखता है। मार्वल के नाम

को लेकर निक और कैरल की बहस छोड़ दें तो बाकी के जितने भी दृश्यों में दोनों साथ आते हैं, कमाल करते हैं।

निर्देशक जोड़ी एना बॉडेन और रयान फ्लिक की ये पहली मेगा बजट फिल्म है लेकिन इसके बावजूद दोनों ने अपनी खास शैली यानी जज्बात की बात को इस फिल्म में भी बरकरार रखा है। फिल्म के एक्शन सीन्स हैरतअंगेज हैं। फिल्म की गति रोमांच पैदा करती है। हां, मेकअप डिपार्टमेंट कहीं कहीं गड़बड़ करता है लेकिन बैकग्राउंड म्यूजिक का शोर बाकी कुछ समझने का मौका देता नहीं हैं। मार्वल के दीवानों के लिए ये फिल्म थोड़ी कमजोर लग सकती है लेकिन ऐसा जानबूझकर इसलिए भी किया गया है क्योंकि कैप्टन मार्वल का असली करिश्मा तो एवेंजर्स: एंडगेम में होना है ।।

कॉमिक्स समीक्षा - उद्गम (Team FMC)

समीक्षक - अंकित निगम

अन्ततः हो ही गया अंगारा "उद्गम" और इसी के साथ एक बार फिर टीम FMC बधाई के पात्र हैं खासकर बल्लू भाई क्योंकि बीता वर्ष उनके लिए बहुत ही कठिन रहा। इन सबके बाद भी उन्होंने इस कॉमिक्स को निकाला ये काबिले तारीफ है। अब बात करते हैं कॉमिक्स की ....

CONCEPT - जैसा कि 'आरम्भ' से हम जानते हैं कि कहानी का मूल विषय अंगारा का एक नया ओरिजिन बनाना है, कथा के इस भाग में ये पता चलता है कि इस नए ओरिजिन में है क्या। विषय की परतें खुलती हैं और हमें एक नए आयाम में ले जाती हैं जहाँ शोध (रिसर्च) भी है, प्रतिशोध (बदला) भी है, एलियन भी हैं, फैमिलियन (परिचित) भी हैं यानी टोटल मसाला उपलब्ध है। कॉन्सेप्ट की गहराई काबिले तारीफ है जो एक ओर द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान विश्व भर मे शुरू हुए आधुनिक हथियारों के निर्माण से लेकर वर्तमान अमेरिका की किसी को खुद से आगे ना बढ़ने देने की महत्वकांक्षा तक को नापती है तो दूसरी ओर मानव उतपत्ति के वैकल्पिक सिद्धांतों का सफर भी तय करती है। इतना गहरा सोंचने के लिए लेखक बधाई के पात्र हैं।

STORY - कहानी वहीं से आगे बढ़ती है जहाँ पर पिछली खत्म हुई थी और इस बार भी यह तीन अलग समयधाराओं को दिखाती है लेकिन ध्यान देने पर पाठक को समझ में आता है कि कथा मूल रूप से दो ही समयधाराओं में सिमटी है और वास्तविक कहानी एक ही समयधारा में आगे बढ़ रही है। जैसा कि पहले भाग से ही स्पष्ट था कि कहानी की आधारशिला अतीत के हिस्से में है और इस भाग में वही पक्ष उभरकर सामने आता है। पहले जो रहस्य बने थे उनके जवाब मिलते हैं और कुछ नए रहस्य सामने आते हैं। कहानी इस तरह कही गई है कि इसमें कोई खामी निकाल पाना जरा मुश्किल ही है मुझे जो एक चीज़ कम लगी वो ये की शुरू में जिस वैज्ञानिक प्रोग्राम का नाम लिया गया है यदि उसके वास्तविक कॉमिक्स(मार्वल) वैज्ञानिकों (एर्स्किन और स्टार्क) का भी

यूज़ करते तो पाठकों को और रुचिकर लगता(ये मेरे निजी विचार हैं)। इसप्रकार की कहानी के लिए लेखक को विशेष बधाई।

EDITING - ये पक्ष इस कॉमिक्स का सबसे कमजोर पक्ष है। सबसे बड़ी कमी ये है कि शुरू में पिछली कहानी का मिनी रिकैप नदारद है जो कि Reconect के लिए ज़रूरी होता है। कई स्थानों पर फ्रेम पुनरावृत्ति(Repeatation) हुई है जो कि ध्यान भंग करती है, कहानी का एक बड़ा हिस्सा (पेज 14,15,16) वही कहानी दोहराता है जो हम आरम्भ में पढ़ चुके हैं यदि इसे इग्नोर करते तो कहानी को 3 और पेज मिलते। इसके अतिरिक्त कहानी की लेंथ थोड़ी और बड़ी करने की आवश्यकता थी जो कि कहानी को थोड़ा और गहराई देती क्योंकि 4 वर्ष पूर्व चल रहे घटनाक्रम को इस भाग में थोड़े और स्थान की आवश्यकता थी (पूर्व में टीम FMC हमें अधिक पन्नों वाली कॉमिक्स दे के लालची बना चुके हैं)। हालांकि ऐसा नहीं है कि इस पक्ष में बस कमियाँ ही हैं क्योंकि इस बार स्टोरी स्विचिंग के क्षेत्र में काफी ध्यान दिया गया है जो की कहानी की निरंतरता को बनाए रखती है। और हाँ बालक कुनाल के रूप में हम सबके (खासकर विनय भाई के) चहेते को देखकर मज़ा ही आ गया 😉।

DIALOGUES - सम्वाद किसी भी प्रकार की कहानी के लिए अलंकार की तरह होते हैं, अच्छे सम्वाद साधारण कहानी को भी असाधारण बना देते हैं। इस कहानी के सम्वाद कहानी को आगे बढ़ाते हैं खासकर डॉ कुणाल का नैरेटिव जो कि बेहतरीन शब्दों से बुना हुआ है। एक्स और डॉ सुबोध के सम्वाद उनके चरित्र की विभत्सता और बालक कुणाल के सम्वाद उसके चरित्र के मर्म को उभारने का काम करते हैं, एक संवाद, "मैं जंग का भागीदार नहीं बनना चाहता था, इसलिए नहीं कि मैं कायर था बल्कि इसलिए क्योंकि मैं जिंदगी की कीमत समझने लगा था।" , यह बताने के लिए पर्याप्त है। हालांकि एक संवाद - "हमें प्रकृति ने नहीं बनाया।" की पुनरावृत्ति अखरती है इसका प्रयोग 3 बार हुआ है जिससे बचा जा सकता था।

ART AND COLORING - ये वो विभाग है जिसमें सबसे ज्यादा मेहनत और कुशलता की आवश्यकता होती है और मेहनत के मामले में टीम FMC को विशेष बधाई दी जानी चाहिए क्योंकि सीमित संसाधनों से ऐसा काम करना आसान नहीं है, रही बात कुशलता की तो वो धीरे धीरे ही आती है। इस कॉमिक्स का आर्टवर्क पिछली की तुलना में दो कदम आगे ही है पहले से ज्यादा डिटेलिंग है, चेहरे की भावभंगिमा संवादों से मेल खाती है इसके लिए अभयजीत भाई और अनुज भाई बधाई के पात्र हैं। बल्लू भाई की

फोटोशॉप की काबिलियत तो जबरदस्त है लेकिन रँगसज्जा में थोड़े से सुधार की गुंजाइश है। हालांकि जिन परिस्थितियों में उन्होंने इस कार्य को सम्पन्न किया है उसे देखते हुए इस बात की प्रशंसा करना ज़रूरी है कि उन्होंने कार्य बंद नहीं किया बल्कि पाठकों की इच्छा का मान रखते हुए ये कॉमिक्स हमें उपलब्ध कराई।

ओवरआल मैं इसे 4/5 मार्क्स दूँगा और कहना चाहूँगा कि ये एक मस्ट रीड कॉमिक्स है जो हमें तुलसी कॉमिक्स के सबसे लोकप्रिय पात्र अंगारा के और नजदीक ले के जाती है। इन सब बातों के अतिरिक्त इस कॉमिक्स में कुछ मित्रों की समीक्षाओं को स्थान देकर टीम FMC ने ये भी जताया है कि ये समीक्षाएं व्यर्थ नहीं होती अपितु वो इन्हें पढ़ते हैं और उन पर अमल भी करते हैं। कॉमिक्स के आरम्भ में नवीन प्रकाशनों के बारे मे लिखी गई बातें कॉमिक्स के एक स्वस्थ भविष्य का आश्वासन प्रदान करती हैं। ये छोटी छोटी बातें एक बड़ी पहल में बदलने में वक्त नहीं लेती इसीलिए महत्वपूर्ण होती हैं। इस "**उद्गम**" के लिए टीम FMC को बधाई। "**प्रोजेक्ट अंगारा**" की प्रतीक्षा में.....

धन्यवाद 🙏
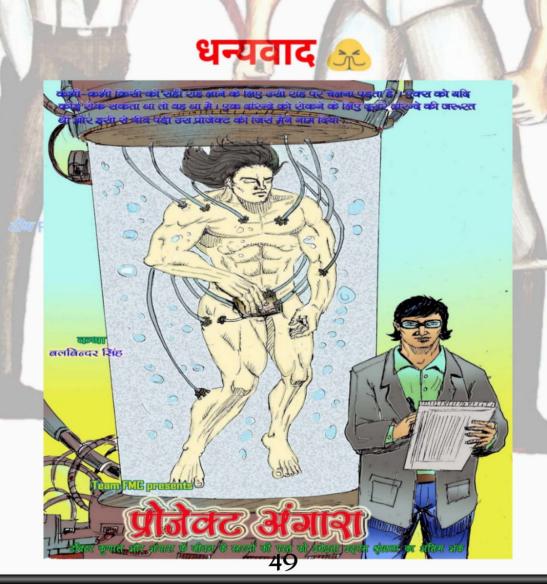
Fiction Comics (2013)

Fiction Comics is promoting multiple characters and series (to be launched in 2013) with catchy promotional artworks and previews. Most publicized among all the characters with few completed stories is Pagli.

FICTION COMICS ENTERTAINMENT

PRESENT

पगली सीरीज

भूली-बिसरी यादे - पगली सीरीज (फिक्शन कॉमिक्स)

प्रजाति

लेखक - विवेक आर्या "कश्यप"

सृष्टि के प्रारम्भ से परमपिता परमेश्वर की बनाई हुई, अद्भुत संरचनाओं में सदैव से किसी न किसी बात को लेकर बराबर युद्ध होता रहा है । कभी देवो का दानवो से स्वर्ग पर शासन को लेकर, तो कभी शांति स्थापना के लिए देव और दानवो का युद्ध, कुछ युद्ध तो सीधा दानव और मानव के बीच हुए, भगवान विष्णु का धरती पर भगवान राम के रूप में अवतरित होकर रावण का संहार करना ।

मनुष्यो के बीच में भी आपस में भीषण युद्ध हुआ है, उदाहरण के तौर पर महाभारत का युद्ध । तो कभी-कभी यक्षों और गंधर्व के बीच अपनी "जाति" के रक्षा के लिए युद्ध । मतलब युद्ध होना नियति है, और वह किसी न किसी बात को लेकर होती ही रहेगी, चाहे आज कलियुग में ही क्यों न ?

पर क्या होगा, जब कोई पूर्ण रूप से अमर होने के लिए किसी प्रजाति विशेष की बलि चढ़ाने पर आमादा हो जाये । और एक नहीं पूरे तीन प्रजातिओ की बलि ।

युद्ध होगा, सिर्फ अपनी प्रजाति के रक्षा के लिए या सम्पूर्ण मानव "जाती" के रक्षा के लिए ।

समय - कलियुग (आसाम का जंगल)

आह, आज सदियों बाद श्राप से मुक्त हुआ, आज देवताओं का दिया हुआ श्राप ख़त्म हुआ, अब फिर से अपने उन अधूरे सपनो को पूरा करूँगा, जिसके लिए देवो में मुझे सदियों तक श्राप के बंधन में बांध दिया था ।

तभी कोई अंजान आकृति बोलती है, "प्रणाम दानवराज, श्राप से मुक्त होने की आप को हार्दिक बधाई । आज सदियों बाद आप आजाद हुए है ।

दानवराज -: हा कुटुम्बी, आज सदियों बाद हम जागे, और तुम्हारा भी कोटि-कोटि धन्यवाद, तुमने हमारे श्रापित शरीर को सदियों तक सुरक्षित रखा । वैसे कितनी सदियाँ बीती अभी तक ।

कुटुम्बी -: महाराज, आपको शायद धैर्य से काम लेना होगा, ये सदियाँ नहीं बीती बल्कि कई युग बीत चुके है, और इस समय आप **कलयुग** में २१वी सदी में है । और समय संतरिका को भी को यहाँ से हटा कर न जाने कहाँ भेज दिया गया ?

दानवराज -: हम दानवराज यक्षक है, हमने पहले भी देवो को हराया है, फिर उन्हें पराजित करेंगे, और उन नाग, अश्व और भेड़िया "जाती" के लोगो की बलि चढ़ाकर अमरता को प्राप्त करेंगे ।

कुटुम्बी -: क्षमा करे , महाराज इस समय काल में अश्व "जाती" विलुप्त हो चुकी है, और भेड़िया "जाती" में सिर्फ एक ही प्राणी रह गया है, जो इन जंगलो की सुरक्षा करता है । पूरा जंगल उसे **भेड़िया देवता** के नाम से पुकारता है ।

दानवराज -: हाहाहा पर कोई बात नहीं, हमारे पास एक अतिरिक्त मार्ग है, हम उसकी सहायता से अपने सारे स्वप्नों

को पूरा करेंगे, पर पहले मुझे एक विशेष कार्य पूर्ण करना है, ताकि मेरे कार्य में कोई अड़चन न आये । अब चलो कुटुम्बी, हमें अभी बहुत से कार्य करना है ।

और दानवराज के अट्टहास से पूरा जंगल थर्रा उठा ।

भेड़िया, फुजो बाबा के आश्रम में-

भेड़िया -: बाबा, कुछ विचित्र लग रहा है, आज वातावरण में । मेरे संवेदी अंग कुछ खतरनाक महसूस कर रहे है ।

फुजो बाबा -: तुम भी न भेड़िया, अगर ऐसी कोई बात होती तो हमारे जंगल में मौजूद कोई न कोई जानवर हमें खबर कर देते ।

पर बाबा ! लेकिन बाबा ने भेड़िया की बात को अनसुना कर दिया ।

वैसे तो हमेशा फुजो बाबा सही होते है, पर शायद आज भेड़िया का अंदाजा सही होने वाला था ।

तभी एक चिड़िया की चहचहाट होती है, और (दोस्तों, ध्यान दीजियेगा फुजो बाबा जानवरो की भाषा जानते है)

फुजो बाबा -: हा बोलो क्या हुआ ? और चिड़िया ने वह सारा वाक्या बता दिया, और फुजो बाबा को उस बात का विश्वास नहीं हुआ ।

फुजो बाबा -: भेड़िया चलो अभी चलो, मेरे साथ ।

भेड़िया -: पर कहाँ बाबा ? भेड़िया ने पूछा ।

फुजो बाबा -: चलो, बस चलो समझाने का वक्त नहीं है ।

भेड़िया -: ठीक है बाबा ।

घटना स्थल पर -

मतलब खबर पक्की है, यहाँ जो भी था, वो यहाँ से जा चूका है ।

भेड़िया -: बाबा आप बहुत गंभीर हो गए, कोई तो बात है, कुछ तो बताइये ।

और फुजो बाबा ने सारी बात भेड़िया को समझा दी, जो उन्होंने ने चिड़िया के मुँह से सुनी थी ।

भेड़िया -: कोई बात नहीं बाबा ऐसे बहुत से खतरे आये और मैंने उन्हें ऐसे ही करके निपटा दिया ।

फुजो बाबा -: मेरे साथ पुस्तकालय चलो, अभी मुझे कुछ जानना है ।

FACE - 2

महानगर- संरक्षक नागराज ।

तिलिस्म के महान ज्ञाता वेदाचार्य ।

क्या बात है, दादा जी आप बहुत ध्यान से कुछ देख रहे है । नागराज उर्फ़ राज ने वेदाचार्य से पूछा ।

वेदाचार्य -: हा ग्रहो और नक्षत्रो की गणना कर रहा हूँ, और इस वक्त सूर्य के ऊपर राहुकाल चल रहा है, और बृहस्पति गृह भी धनु राशि से निकल कर मकर राशि की तरफ बढ़ रहा है ।

राज -: मतलब दादा जी मुझे साफ और साधारण शब्दों में समझाए की आखिर हुआ क्या ?
और वैसे भी ऐसे ग्रहण तो हर वर्ष, दो वर्ष पर लगते ही रहते है ।

वेदाचार्य -: नहीं नागराज, नहीं, हर बार की तरह नहीं ये ग्रहण काली शक्तिओ के लिए कुछ ज्यादा ही विशेष है, ऐसा लगता है, जैसे किसी काली शक्ति का पुनर्जन्म हुआ हो ।

राज -: कोई बात नहीं दादा जी, नागराज ऐसी न जाने कितनी काली शक्तियों से निपट चुका है ।

तभी हाल भारती में का प्रवेश होता है और, अरे राज ऑफिस नहीं चलना है क्या ?

राज -: हा चलना तो है, वो थोड़ा दादा जी से ज्योतिष के टिप्स ले रहा था ।

वेदाचार्य -: तुम्हे सावधान रहने की जरुरत है नागराज ।

राज -: ठीक है दादा जी मैं सावधान ही रहूँगा, भारती अब चलो ऑफिस ।

आसाम का जंगल
जंगल के दूसरे हिस्से में

कुटुम्बी -: दानवराज आप यहाँ क्या खोज रहे है ? वैसे भी मैं इस वन में सदियों से हूँ, अलग- अलग रूपों में पर यहाँ ऐसी कोई वस्तु नहीं जो हमारी सहायता कर सके ।

दानवराज -: तुम शायद भूल रही रहो कुटुम्बी जो मेरी आंखे देख सकती है, वो तुम्हारी आंखे कभी नहीं देख सकती है ।

पर महाराज मेरे और मेरे मायावी शक्तियों के अनुसार यहाँ ऐसा कुछ भी नहीं है, "कुटुम्बी ने कहा"

बस अब तुम देखते जाओ, हम क्या करते है ?

हमें सबसे पहले उस समय संतरिका को प्राप्त करना है । फिर हम बताएँगे की तत्पश्चात हमें क्या कार्य करना है ।

कुटुम्बी -: पर महाराज समय संतरिका यहाँ है ही नहीं, और शायद इस काल या इस आयाम में ही नहीं है । तो निरर्थक आप अपना समय यहाँ नष्ट कर रहे है ।

दानवराज यक्षक -: शांत हो जाओ ।

कुछ मंत्र पढ़ने के बाद, दानवराज यक्षक ने अपने किसी सेवक को पुकारा । तक्षाक प्रकट हो ।

और तक्षाक प्रकट होता है, फिर-

तक्षाक -: आदेश करे स्वामी ।

दानवराज -: सुनो तक्षाक हमें समय संतरिका चाहिए, वो इसी जंगल में है, और हम चाहते है, की तुम इसे प्राप्त करके हमें दो । अब जाओ ।

तक्षाक -: जो आज्ञा दानवराज ।

और तक्षाक ने "समय संतरिका" को खोजने के लिए पूरे जंगल में उत्पात मचाना शुरू कर दिया ।

भेड़िया -: बाबा आप क्या खोज रहे है, कुछ तो मुझे बताइये ?

फुजो बाबा -: मिल गया, हा ये वही है, ये भगवान अब क्या होगा ? भेड़िया अब ध्यान से सुनो ।

फिर फुजो बाबा ने भेड़िया को वह सारा इतिहास और तीनो "जातियों" की बलि के बारे में सब समझा दिया ।

तुम्हे सावधान रहना होगा भेड़िया, क्योकि तुम भेड़िया "जाती" के अंतिम वंशज हो, शायद पहला शिकार भी ।

तभी तक्षाक के आतंक से जो चीख-पुकार मची थी, उसकी खबर भेड़िया के कानो तक जा पहुंची ।

भेड़िया -: बाबा, मुझे जाना होगा, लोगो को मेरी जरुरत है ।

फुजो बाबा -: जाओ, पर सावधान रहना, तब तक मै और छान-बिन करता हूँ ।

तक्षाक -: सुनो जंगलियों, मुझे "समय संतरिका" चाहिए, तुम मुझे दे दो, तब मै तुम्हारे प्राण छोड़ दूंगा ।

तुम्हे "समय संतरिका" मै दूंगा।

"**भेड़िया देवता मदद**" *के साथ भेड़िया की चमत्कारी "गदा" का वार तक्षाक पर पड गया, और-*

शेष अगले अंक मे......

तो दोस्तों उम्मीद है "**प्रजाति**" का प्रथम भाग आप को पसंद आया होगा, और अपने विचार अवश्य दीजियेगा। ब्लॉग में आप सब के विचार प्रस्तुत है ।पार्ट-२ शीघ्रता से उपलब्ध करवाऊंगा । धन्यवाद ।

कहते हैं, हम जो भी पाप कर्म करते हैं उसकी सजा हमें इसी जन्म में और इसी धरती पर ही भोगनी पड़ती है। जल्लाद सिंह के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। जो अमरता किसी को वरदान के रूप में भी प्राप्त नहीं हो पाती, वह उसे मिली एक श्राप के रूप में।

Indian COMICS Fandom Awards 2018

List Of Winners ICFA 2018

Total Winners - 29 (9 Categories)
Hall of Fame 2018 Inductees - 6
Honorable Mentions - 4

Best Blogger-Reviewer
Prabhat Kumar Singh (Gold), Rahul Raj (Silver), Himanshu Khatri (Bronze)

===========

Best Cartoonist
Sushant Panda (Gold), Husain Zamin (Silver), Samir Narayan (Bronze)

Best Colorist

Aditya Kishore (Gold), Pasang Amrit Lama (Silver), Vibhav Pandey (Bronze)

===========

Best Comics Collector

Prahlad Dubey (Gold), Shalu Gupta (Silver), Gopal Sharma (Bronze)

===========

Best Fanfiction Writer

Hukum Mahendra (Gold), Balbinder Singh (Silver), Talha Faran and Samvart Harshit [Tie] (Bronze)

===========

Best Fan Artist

Himmat Singh (Gold), Baljinder Singh Korwa (Silver), Dheeraj Anand and Hemant Dhawal [Tie](Bronze)

===========

Best Fan Work (Comic, Video, Music etc)

Apocalypse - FMC (Gold), Toon Tales: Hasgulle (Silver), Sarpvan ka Pishach (Bronze)

===========

Best Webcomic

Green Humour (Gold), Delicate Desi - Akoodles (Silver), TaccoMacco (Bronze)

===========

Best Cosplay

Rudra Rajpoot (Gold), Nikhil Verma (Silver), Agam Sharma (Bronze)

===========

Hall of Fame

Mohan Sharma, Aabid Surti, Bharath Murthy, Shambhu Nath Mahto, Arun Prasad, Akshay Dhar

===========

Honorable Mention

*) - **Emerging Publications** - Fiction Comics, Comix Theory

*) - **Best Community** - Indian Comics Universe Fan Club (ICUFC)

*) - **Best Magazine** - Nanhe Samrat

ICfA 2018 अवार्ड कैटेगरी

Best Blogger Reviewer
Best Cartoonist
Best Colorist
Best Comics Collector
Best Fanfiction Writer
Bast Fan Artist
Best Fan Work (Comic, Video, Music etc)
Best Web Comics
Best Cosplay
Hall Of Fame

CHITTI THE SUPER 'ROBOT, KRISH, INSPECTOR STEEL, IRONMAN

लेखक - विवेक आर्या "कश्यप"

स्थान -: चेन्नई, राष्ट्रीय संग्रहालय (NATIONAL MUSEUM)

प्रिया मेहरा (प्रियंका चोपड़ा) -: कृष्णा... क्या तुमने बंसी को कही देखा है ?

कृष्णा मेहरा (ऋतिक रोशन) -: वो तो तुम्हारे साथ था न, मैंने तो उसे तुम्हारे साथ देखा था ।

प्रिया मेहरा -: हा, अभी थोड़ी देर पहले ही तो मेरे साथ पर अभी न जाने कहा चला गया, देखो प्लीज जल्दी उसे दूढ़ो, मुझे बहुत ही अजीब सा लग रहा है ।

बंसी, कृष्णा मेहरा का 4 वर्ष का बेटा (अधिक जानकारी के लिए ऋतिक रोशन की "कृष" फिल्म देखे)

कृष्णा मेहरा -: तो तुम यहाँ हो बेटे !

बंसी -: पापा-पापा ये कौन है, क्या है ? एक साँस में मासूम से बंसी ने सवालों की बौछार खड़ी कर दी ।

कृष्णा मेहरा -: बेटा ये हमारे देश के महान वैज्ञानिक प्रोफ़ेसर वशीकरण का बनाया एक अत्याधुनिक रोबोट था, जो इंसानो की तरह सोच सकता था, पर कुछ वजहों से ये रोबोट बेकाबू हो गया, और सरकार ने इसे डिस्मेंटल कर दिया, और इसके पार्ट को चेन्नई museum में रखवा दिया । और हा, इसका नाम चिट्टी द सुपर रोबोट है ।

(अधिक जानकारी के लिए रजनीकांत की रोबोट फिल्म देखे)

अब चलो घर चलो, हमें कल मुंबई के लिए भी निकलना है, और तुम्हे स्कूल भी जाना है ।

पर मम्मी, बंसी की नजर अब भी उस चिट्टी पर ही थी, जैसे चिट्टी अभी बंसी से बोल उठेगा ।

RAJNAGAR (POLICE HEADQUARTER)

राजन मेहरा -: हेलो, इंस्पेक्टर स्टील अपनी लोकेशन की रिपोर्ट दो। हेलो, स्टील क्या तुम मुझे सुन रहे हो ?

इंस्पेक्टर स्टील -: यस सर, मैं इस समय राजनगर के जंगलो में हूँ, इस वक्त कुछ आतंकियों के पीछे हूँ । वो मेरे नजरो के दायरे में है, इस बार उन्हें बच के जाने नहीं दूंगा, "ओवर एंड आउट" ।

राजन मेहरा -: ओके स्टील हम तुम्हे ट्रैक करने की कोशिश करते है, और मदद भेजते है, "ओवर एंड आउट" ।

स्टील -: ओके सर, मैं अपने हेलीकाप्टर से नीचे जा रहा हूँ ।

नीचे आने के बाद

यस ये दिखा पहला आतंकी, सुनो अपने आपको कानून के हवाले कर दो," इंस्पेक्टर स्टील ने कहा"

आतंकी -: ओह तो कबाड़ का डिब्बा हमें रोकेगा, अब तू सीधा कबाड़ के डिब्बे में जायेगा।

और दनादन गोलिया इंस्पेक्टर स्टील पर फायर कर दिया, पर बेचारा कहाँ जनता था ?

कि स्टील के लोहे के शरीर पर गोलियों बेअसर थी, पर स्टील का एक हल्का सा मुक्का आतंकी को अस्पताल पहुंचाने के काफी था ।

स्टील -: पता था, तुम नहीं मानोगे, अब अस्पताल जाओ।

आतंकी -: आह. याकूब, मेमन, अलफांसे, चाल्स, स्क्कुल सावधान हो जाओ, मैं पकड़ा गया, इंस्पेक्टर स्टील ने मुझे गिरफ्तार कर लिया है।

उसके बाद आतंकी बेहोश हो गया ।

इंस्पेक्टर स्टील -: ओह शीट, इसने अपने साथियो को खबर कर दी, अब अगर उन्हें जल्दी नहीं खोजा गया तो वे भाग जायेगे।

एक मिनट एक तरीका है, मेरा सुपर हेलीकाप्टर, और उसमे लगे अत्याधुनिक कैमरे ।।

[Commond Mode Activate]
[Satellite Camera On]
[Search On Full Area]

कमांड देने के बाद "स्टील" के हेलीकाप्टर में लगे कमरे जंगलो के खाक छानने लगे, और लगभग कुछ देर बाद परिणाम सामने आया।

अच्छा तो, मुझसे बचकर कहाँ भागोगे। और थोड़ी देर बाद ।

इंस्पेक्टर स्टील -: यू ऑर अंडर अरेस्ट, तुम्हे गिरफ्तार किया जाता है, तुम्हारा जुर्म, तस्करी, ड्रग्स, गैर क़ानूनी हथियार सप्लाई के अपराध में तुम्हे गिरफ्तार किया जाता है ।

याकूब -: अच्छा,तो तू हमें गिरफ्तार करेगा, हम तेरे शरीर को पूरी तरह छेद देंगे।

और वही कोशिश की जो उनके पहले साथी ने की थी, बस वही जेल जाने से पहले अस्पताल जाने का ड्रामा, गोलियों की तड़ तड़तड़ात से पूरा जंगल गूंज उठा।

इंस्पेक्टर स्टील -: तो तुम लोगो ने अपनी आखिरी इच्छा पूरी कर ली, अब मेरी बारी है ।

और स्टील के एक-एक मुक्के से ही सब बेहोश हो गए।
बेहोश होने से पहले एक आतंकी ने धमकी दी.. आह, हम हाइड्रा के सिपाही है, अब हाइड्रा तुम्हारे साथ-साथ पुरे हिंदुस्तान को तबाह कर देगा ।

हेलो, पुलिस हेडक्वार्टर मैंने सारे आतंकियों को पकड़ लिया है, ओवर एंड आउट|

RAJNAGAR POLICE HEADQUARTER

गुड जॉब, स्टील बहुत अच्छे, पर तुम खुश नहीं लग रहे हो क्या बात है," कमिश्नर मेहरा ने स्टील से कहा "

स्टील -: नहीं सर वो बात नहीं, ये तो आधी सफलता है, ये हाइड्रा के आतंकी है, अभी हाइड्रा को ख़त्म करना बाकि है। मैं हाइड्रा के बारे पूरी जानकारी चाहता हूँ । उनका आगे का क्या प्लान है?

राजन मेहरा -: जरूर, हम भी चाहते है, की आतंकी जल्दी ही ख़त्म हो और साथ में हाइड्रा भी । मैं हाइड्रा के बारे में पूरी जानकारी निकलवाता हूँ, अमेरिका में मेरा एक दोस्त है, उसके पास हाइड्रा की पूरी जानकारी है , निक फ्यूरी ।

यूनाइटेड स्टेट ऑफ़ अमेरिका

हाइड्रा का गुप्त लैब

जनाब स्ट्रकर हमारा मिशन फिर फेल हो गया, हमारे आदमियों को हिंदुस्तानी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है ।

स्ट्रकर -: डैम इट, यहाँ हम Avengers से परेशान रहते है, और वहाँ भी ।

जनाब वहाँ भी किसी उन्हें लोहे जैसे दिखने वाले आधा इंसान और आधा रोबोट टाइप मशीन ने उन्हें पकड़वाया है ।

स्ट्रकर -: कोई बात नहीं, अब उनसे भी निपट लिया जायेगा, वैसे भी हमारा मिशन फेल हो चुका है और अब कोई

दूसरे तरीके से पूरा करना होगा, किसी की मदद लेकर ।

NEWYORK - AVENGERS TOWER

फ्राइडे -: सर, आपके के लिए एक विशेष सूचना, हाइड्रा के आतंकियों की हलचल भारत में हुई है, हमारे सेटेलाइट ने उन पर नजर रखा था ।

आयरन मैन - साथियो यार अभी तो भारत से लौटा हूँ, खैर छोडो बताओ ।

फ्राइडे -: सर हाइड्रा के कुछ आतंकियों ने भारत में किसी अभियान के तहत कुछ चुराने की कोशिश की पर इंडियन पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया ।

टोनी -: पर उन्हें इंडिया में चोरी की, ऐसा क्या जादुई चिराग हाथ लग गया हाइड्रा के हाथ ।

फ्राइडे -: सर, मामले को समझने के लिए आपको किसी की मदद लेनी होगी ।

टोनी -: वो तो है, मैं फ्यूरी से इस बारे में समझाता हूँ ।

शील्ड, अमेरिका का गुप्तचर विभाग

फ्यूरी -: बात तो तुम्हारी सही है स्टार्क कि उन्हें इंडिया में ऐसा क्या मिल सकता है ? जिसके के लिए उन्होंने वह चोरी की, हाइड्रा फिर सक्रिय हो गया है ।

टोनी -: सक्रिय से क्या मतलब ?

फ्यूरी -: क्योकि अभी थोड़ी देर पहले इंडिया पुलिस राजनगर के कमिश्नर राजन मेहरा का कॉल आया था, और उन्होंने हाइड्रा की पूरी जानकारी हमसे ली है । क्योकि हाइड्रा ने जो चुराने की कोशिश की थी, उसे वहां के स्पेशल कॉप इंस्पेक्टर स्टील ने नाकाम कर दिया, और मुझे उम्मीद है की वो उन्हें फिर चोरी करने की कोशिश करेगा ।

देखो स्टार्क मैं बस इतना कहूंगा, कुछ मामले तुम या एवेंजर्स संभाले तो बेहतर है ।

टोनी -: यक़ीन नहीं होता ये बातें तुम कह रहे हो, फ्यूरी ।

फ्यूरी -: जनता हूँ, ये Unofficial है, पर कुछ काम ऐसा है, जिन्हे पुलिस या शील्ड नहीं सम्भाल सकती उन्हें सिर्फ एवेंजर्स ही सम्भाल सकते है, और हाइड्रा को सिर्फ एवेंजर्स ही सम्भाल सकते है ।

तो दोस्तों, रोमांच बढ़ता जा रहा है, और साथ में मनोरंजन भी, और मैं उम्मीद भी करता हूँ की आप लोगो को स्टोरी पसंद आयेगी फिर मिलते है अगले अंक मे .....

बफीली
बिल्ली?

समाप्त!
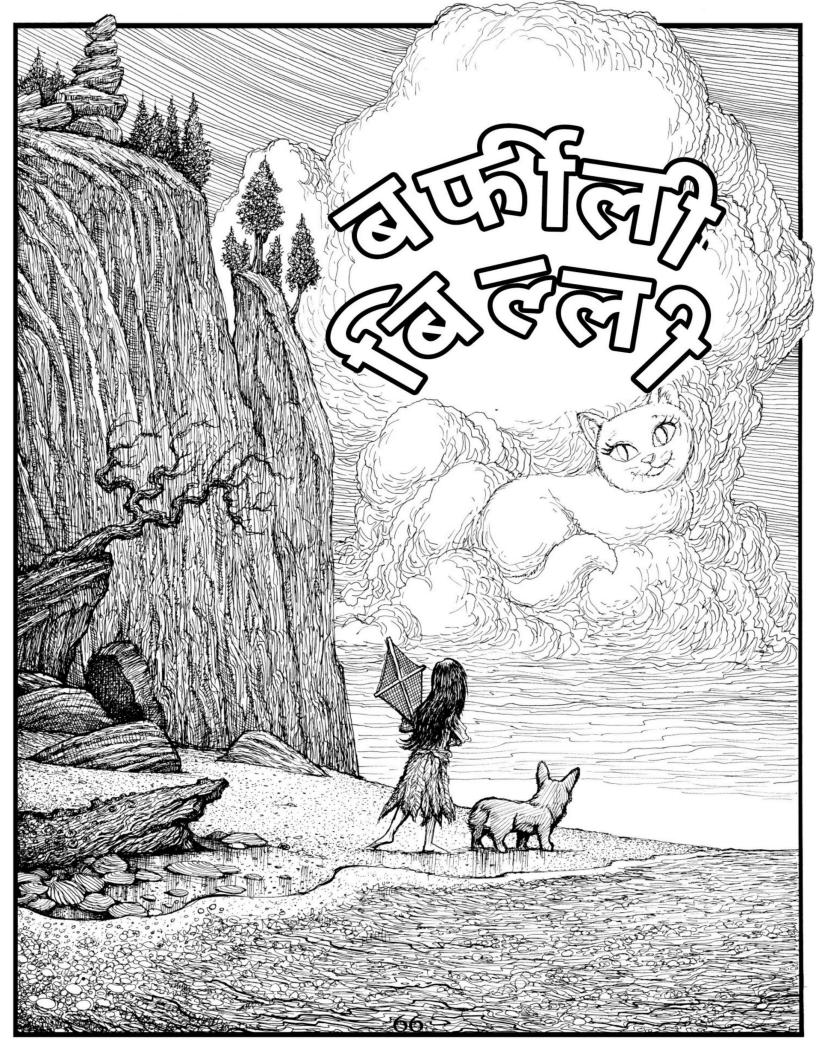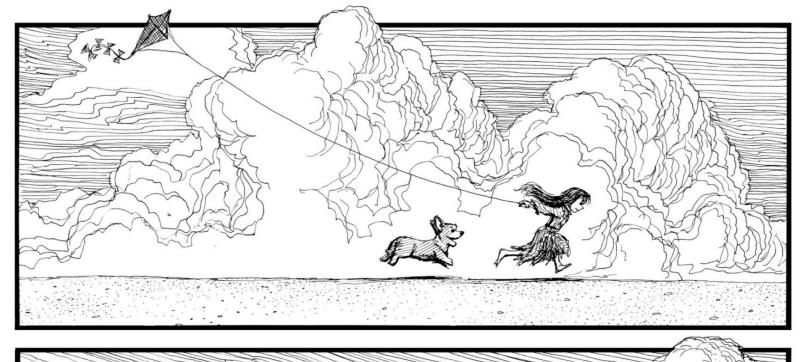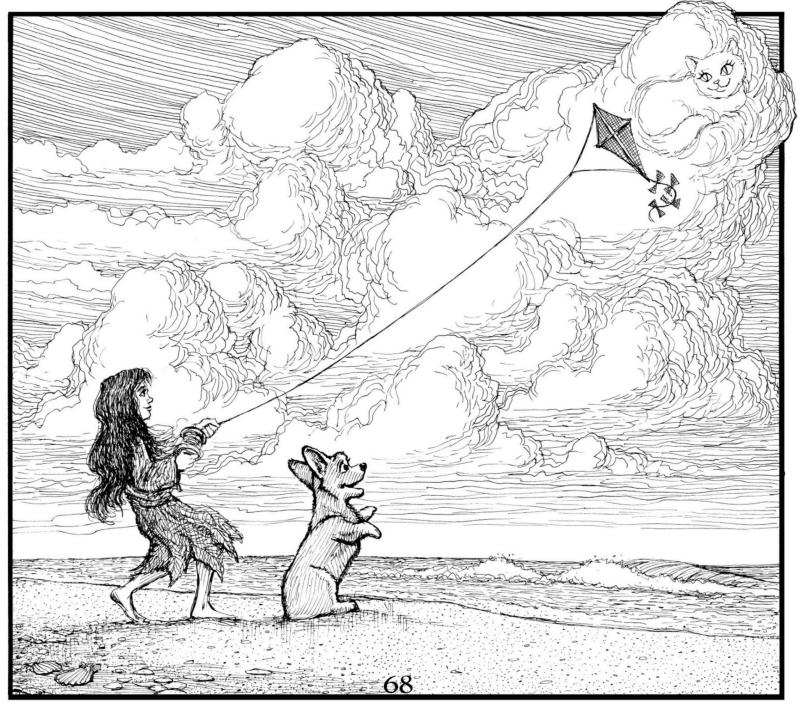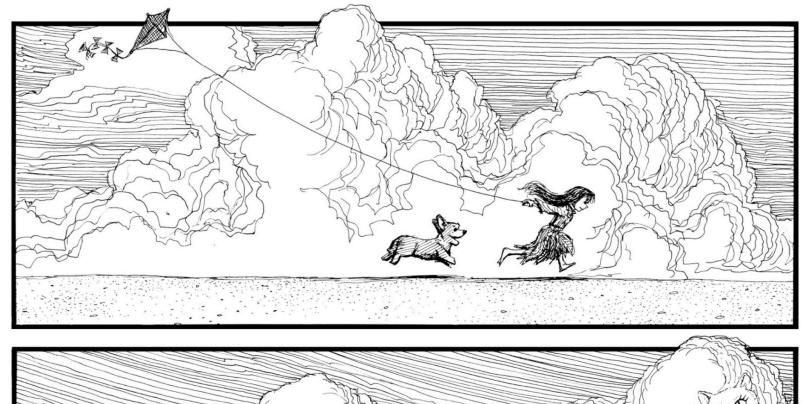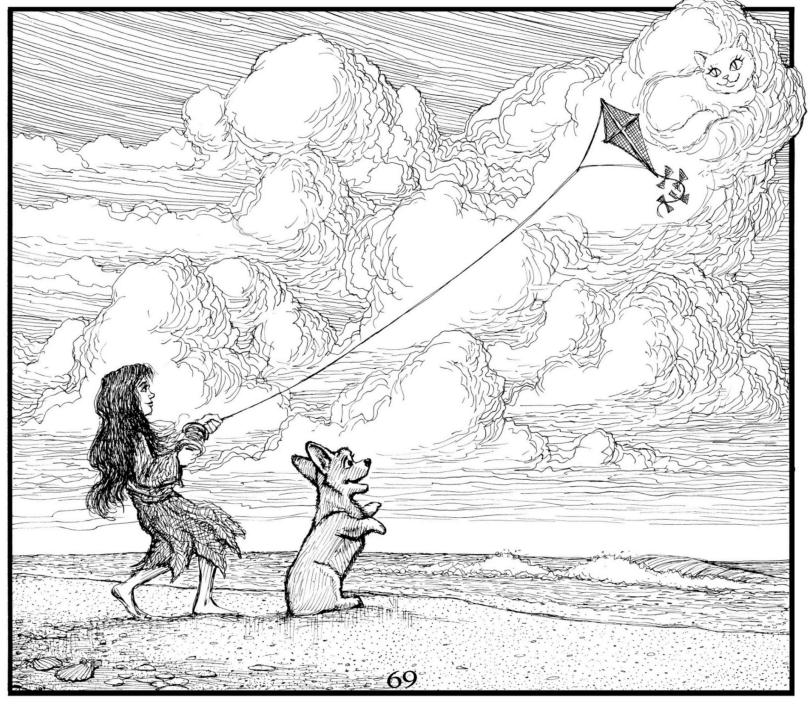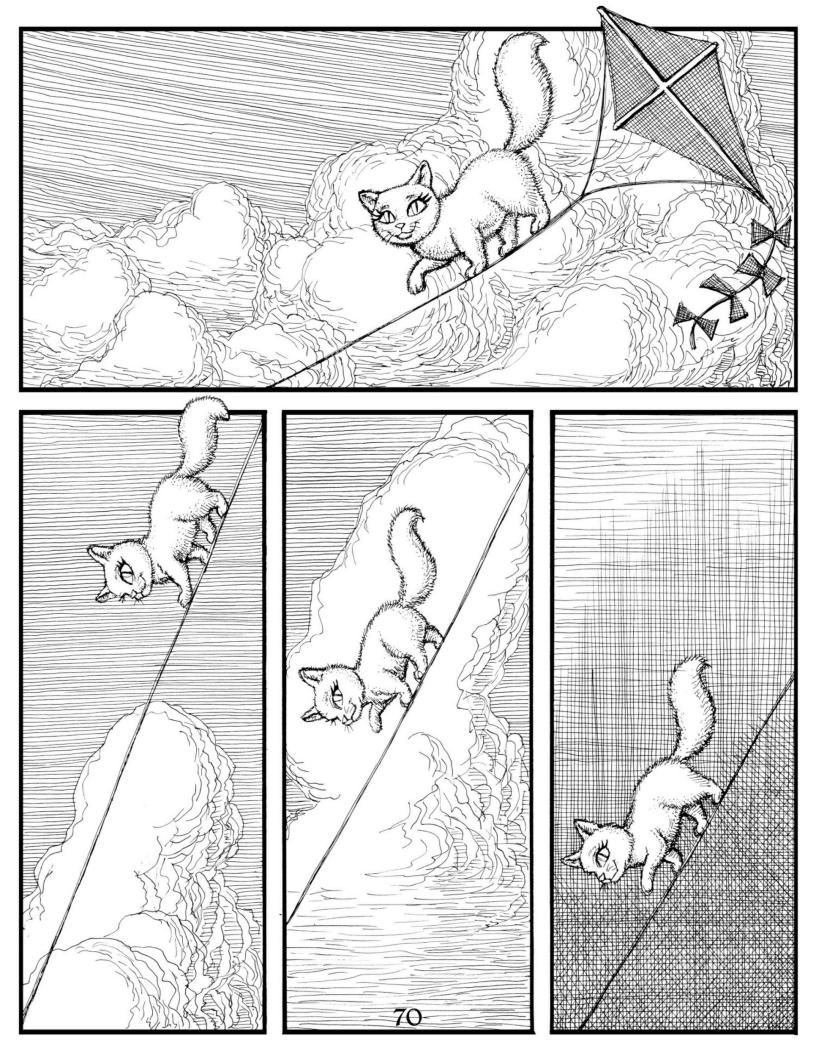
होली का हुड़दंग (नाट्य रुपांतरण)

लेखक - विवेक आर्या "कश्यप"

प्रणाम मित्रो, इस कहानी के माध्यम से मैं आप सभी मित्रो का मनोरंजन करना चाहता हूँ, इस कहानी में मेरे माध्यम से कहीं सारी बातें काल्पनिक है, और सिर्फ मनोरंजन के लिए है ।

अतः इसे किसी तरह से अपने दिल पल ना ले ।

JUDGE -: जज श्री Zhand Duniya श्री Rajesh Jasiwal (लरप लरप चोप चोप वाले) श्री Upendra Raj ये अब यहा जजमेंट मे पधारेंगे ।

एंकर -: विवेक आर्या "कश्यप"

Artist -: Rinku Gupta, Shivam Soni, Rishu Gupta, Anup Soni, Shyam Gupta, Prashant Kadam, Sudhakar Prajapati, Rajkumar Agrahari, Yash Kashyap

Cameraman -: *Saraimeer Reserve Bank*

हमारे सरायमीर के सारे छोकरे "होली के हुड़दंग" सीरियल में ऑडिशन देने आए, और सभी हीरो बनना चाहते है, भगवान की दया से किसी के पास टैलेंट की कोई कमी नहीं है । सब कलाकार एक से बढ़कर एक है । तो चलिए देखते है कौन Zhand Duniya के इस Reality Show सेलेक्ट हो सबसे ज्यादा बेइज्जत होता है ।

विवेक -: हैलो दोस्तों मैं आप सभी का स्वागत करता हूँ, आपको हमारे शो "होली के हुड़दंग" में ।

कौन जीतेगा कौन हारेगा ये आपको समय बताएगा ?

तो हमारे पहले प्रतियोगी है, **Rishu Gupta** उर्फ़ भवानी प्रसाद गुप्ता ।

Upendra Raj -: हा, तो रिशु जी बताइये आप में क्या टैलेंट यानि गुण है, आप क्या-क्या कर सकते है, पिछली होली अपने कैसे मनाई थी।

रिशु गुप्ता -: जी मैं, शायरी बहुत अच्छी बोल लेता हूँ ।

राजेश जैसवाल -: अच्छा तो आप शायरी अच्छी पेल लेते है, तो चलिए आप फटाफट कुछ शायरी पेलना शुरू कीजिये ।

रिशु -: जी, तुम मुझे गेहू दो, मैं तुम्हे आटा दूंगा ।

Zhand duniya -: बेटा, ये शायरी नहीं है, ये एक महान व्यक्ति का नारा है, जिसे तू अपनी शायरी बोल रहा है, अपना कुछ सुना ।

रिशु -: जी सर, होलिया में डालब हम अयीसन अयीसन डाल, रंग देब तोहे और तोहार माल जोगीरा सारा रा रा रा बोला हाइ रे हाइ हइया ।

राजेश जैसवाल -: अच्छा ये बताइये इस बार होली कैसे मनाएंगे ?

रिशु -: सर थोड़ा पास आइये तो बताये, इस बार होली कैसे मनाएंगे ?

राजेश जी कुर्सी से उतर कर रिशु के पास जाते है, और रिशु ने काला रंग पोतकर, सर जी को बता दिया की वो होली कैसे खेलेंगे ?
पीछे से झंड दुनिया और उपेन्द्र राज राजेश जी की खिचांई करते है - ले पड़ गई, कलेजे को ठण्ड मिल गई, करवा ली बेइज्जती ।

अब राजेश जी का पारा सातवे आसमान पर, अबे गार्ड इस नामुराद को बहार करो यार, साले ने बन्दर बना दिया । इससे पहले की राजेश सर अपना डम्बल रिशु को चला कर सर फोड़ देते, पीछे से सुपर कंप्यूटर झंड दुनिया ने आवाज़ लगाई, अरे राजेश शांत हो जा, बच्चा था, और बच्चो से गलती हो जाती है ।

उपेन्द्र -: हा यार छोडो अगले प्रतियोगी को बुलाओ ।

राजेश जैसवाल -: अरे नहीं यार साले ने मूड ख़राब कर दिया । तुम बे ऑडिशन से सस्पेंड किये जाते हो, भागो यहाँ से अपनी शक्ल मत दिखाना ।

विवेक - रिशु जी आप सस्पेंड किये जाते है ।

अब न जाने क्यों, रिशु का मेरे यानि एंकर के ऊपर दिमाग ख़राब हो गया, और धमकी देते हुए बोले -

अगर मैं हीरो नहीं बना तो, मैं किसी को बनने भी नहीं दूंगा, तू स्टूडियो से बाहर आ तेरी बजाता हू । तुझे पेंचकस और पलास से 440 वाट झटका देकर तेरी वाट लगता हू ।

झंड दुनिया -: अगले प्रतियोगी को बुलाया जाये ।

विवेक -: और हमारे अगले प्रतियोगी है, भावी गुरु जी उर्फ़ *शिवम सोनी* जो अपने धुँवाधार टैलेंट से मशहूर है, लड़किया इनके पीछे पागलो की तरह बौराये रहती है, और ये लड़कियों पर घास भी नहीं डालते ।

उपेन्द्र -: ओए पुत्तर तेनू ये बता तुझमे क्या टैलंट है, और तू घास का कारोबार कब से शुरू किया ?

शिवम -: सर मैं लड़किया पटाने में एक्सपर्ट हूँ, ऐसी कोई लड़की नहीं है, जिसे मैं पटा न सकू ।

राजेश -: अबे ऑडिशन देने आया है या छिछोरपंती करने, अपना टैलेंट बता क्या कर सकता है, और हाथ में भदेला क्यों लटका लिया है ?

शिवम -: सर मैं गाना गाता हूँ, वो भी सुर में । और ये भदेला मेरे टैलेंट की पहचान है, इसे बजा-बजा कर गाता हूँ ।

उपेन्द्र - अच्छा तो फटाफट एक तड़कता-फड़कता गाना गाकर सुनाओ ।

शिवम -: ए राजा-राजा करेजा में समां जा, उठा तानी कोरा, देहिया में कस के सइंया मारे ला गचा-गचा गच-गच ।

झंड दुनिया -: अबे बेसुरे बंद कर ये भोपू मेरे जैसे सुपर कंप्यूटर के कान के परदे फट गए, इन जजों का क्या होगा, ऐसे कोई गाना गाता है, इसमें सुर कहा आता है, ताल कहाँ आता है ?

इसे भी बाहर उठा कर फेंको ।

शिवम -: कृपा करके एक मौका और दे दीजिये, मैं फिर कहाँ जाऊंगा, मेरा बापू मुझे घर से धक्के मारकर निकल देगा, उन्होंने बोला था, तू इस बार "होली का हुड़दंग" में पास हो जायेगा तभी तुझे घर में घुसने दूंगा, नहीं तो घर में आने के बारे में सोचिओ भी मत ।

जज आपस में निर्णय करते बच्चे को एक और मौका दिया जाये, अतः एक और मौका दिया गया ।

शिवम -: होली में देखिला खड़ा -खड़ा माल,
हमके भी देखे उ खड़े -खड़े माल
पूछी ल हम उसे तोके डाली-डाली की न
उहू बोले हमके डाला-डाला सैया हा ।।
जोगीरा सारा रा रा बोला हैरेय रे हैरेय रे हैया ।

उपेन्द्र -: न पुत्तर न पुत्तर न मजा नहीं आया, तू मुंबई नहीं आ सकता तुझमे टैलेंट नहीं है, अबे तुझमे तो हीरो बनने के कोई गुण नहीं नजर आते है, तू घर चला जा, ये तेरे बस का रोग नहीं है ।

अब शिवम का पारा चढ़ गया और गुस्से में उसने अपना भदेला चला कर, राजेश की खोपड़ी फोड़कर फरार हो गया ।

विवेक -: दोस्तों ये तो फरार हो गए, हम अगले प्रतियोगी को बुलाने से पहले एक छोटा सा ब्रेक लेंगे ।

राजेश -: लरप-लरप, चोप-चोप, गचर-गचर गच्च-गच्च, सपाट मारते हुए ।

झंड दुनिया -: अबे राजेश तू हमेशा ये "लरप-लरप, चोप-चोप, गचर-गचर गच्च-गच्च" क्यों बोलता है, ये बात मेरे जैसे सुपर कंप्यूटर को समझ नहीं आयी ।

राजेश - ये सिर्फ इंसानो के काम की चीज है, ये तुम जैसे मशीनों के काम की चीज नहीं है, समझा ।

उपेन्द्र -: मुझे सब समझ आता लरप - लरप चोप चोप क्या है ?

ब्रेक के बाद हमारे अगले प्रतियोगी है, जो मुँह उठाये चले आये है, सबसे छोटे बाल कलाकार *रिंकू गुप्ता* है ।

झंड दुनिया -: अबे तू इतना लंगड़ा के क्यों चल रहा है ? तेरी टांगे किसने तोड़ी, किसे छेड़ दिया

बे जिसकी वजह से टांगे तोड़ दी गई ।

रिंकू -: सर देखिये मुझे भी एंकरिंग का बहुत शौक था, जिसका चाहे उसका इंटरव्यू लेने पहुंच जाता था, बस एक बार गलती से सांड का इंटरव्यू लेने की कोशिश की थी, उसी चक्कर में मेरी टांगे टूट गई ।

राजेश -: अबे साफ-साफ बोल न सांड ने दौड़ा के तुझे फोड़ा, चल छोड़ ये बता तुझमे टैलेंट क्या है, क्या तीर मार सकता है ।

रिंकू -: सर मैं होली खेलने में उस्तादों का उस्ताद हूँ, पूरे मोहल्ले में कोई भी मेरे जैसा होली में हुड़दंग नहीं मचा पाता है ।

झंड दुनिया -: वो सब तो ठीक पुत्तर है, पर तुझमे हीरो बनने के क्या लक्षण है, वो बता ?

रिंकू -: जी सर हीहीही, जी मैं सुर में बिरहा, कौव्वाली गाता हूँ, एक बार में बीस-बीस लोगो को उठा के पटक देता हूँ, और सर मेरा एक यूट्यूब चैनल भी है, आपके नाम से Zhand duniya ।

उपेन्द्र -: तो चल पुत्तर फटाफट एक कौव्वाली सुना दे ।

रिंकू -: कजरा रे, कजरा रे तेरे काले-काले लौ...

उपेन्द्र -: अबे वो लौ.. नहीं नैना होता है ।

रिंकू -: सर वो मैंने गाने में थोड़ा बदलाव किया है हीहीही ।

राजेश - अबे बदलाव ऐसा मत कर की गाने की माँ बहन एक हो जाये । चल कुछ और सुना ।

रिंकू -: जी, ले-ले ले ले लौ...

झंड दुनिया -: अबे तेरे हर गाने में ये लौ.. क्यों आता है ? अबे तेरी प्रॉब्लम क्या है ?

रिंकू -: सर, सर एक मिनट एक मस्त आइटम है, मेरे पास, एक मिनट !

विवेक - क्या, आइटम वह मुझे भी आइटम बहुत पसंद है ।

झंड दुनिया -: अबे चिरकुट वो ऑडिशन आइटम की बात कर रहा है, तू क्या समझ रहा है ?

विवेक - जो आप समझ रहे है , वही मैं भी समझ रहा हू ?

तभी रिंकू झल्ला उठता है, अरे मेरी भी कोई सुनेगा ।

झंड दुनिया -: ओये पुत्तर नाराज क्यों हो रहा है ? चल दिखा अपना टैलेंट ।

रिंकू -: एक वो भोली सी लड़की थी, जो चुम्मा उधार देती थी,
उसका बाप बीच आया आया और मेरी टांग तोड़ी थी ।

झंड दुनिया -: अबे यार ये सब भी करते हो, तुम लोग होली में ! हे भगवान, कहाँ जायेगा मेरे देश का भविष्य ?

रिंकू -: क्या हुआ सर, क्या मैंने अच्छा नहीं गाया ?

राजेश -: ओये पुत्तर अबे तूने इतना अच्छा गाया, हमारी आंखे भर आयी, कहाँ से सीखी इतनी छिछोरपंती, कौन सा कोर्स किया बे ?

उपेन्द्र -: गॉर्ड, इसे भी बाहर उठाकर फेंको, कम्बख्त को ।

रिंकू - पर सर हुआ क्या ?

झंड दुनिया - कुछ नहीं पुत्तर बस हमारी आंखे भर आई, अबे गॉर्ड जल्दी कर, और तू बे विवेक जल्दी से अगले प्रतियोगी को बुला ।

रिंकू -: तू ससुरो लोग बहरे निकला तब बताइला तोहरे लोगन का !

उपेन्द्र राजेश से भाई ये छोकरा तो काफी खतरनाक लग रिया है, भाई जल्दी से अगले प्रतियोगी बुला ।

विवेक -: तो दोस्तों जैसा की आप देख रहे है, हमारे लगातार ये तीसरे प्रतियोगी फेल हो गए है । तो दर्शको आप को क्या लगता है, किसी का सिलेक्शन हो पायेगा ।

तभी सरसराता हुआ पूरे १ किलो का डम्बल विवेक के सर से लहराता हुआ निकल गया, जिसे राजेश ने फेककर मारा था ।

राजेश -: अबे उधर क्या लरप-लरप चोप-चोप कर रहा है, अगले प्रतियोगी को बुला फटाफट (गुस्से में)

विवेक -:यस यस, तो हमारे अगले प्रतियोगी है, **Shyam Gupta** उर्फ़ काल पहेलियाँ उर्फ़ दशानन रावण ।

श्याम -: प्रणाम सर ।

राजेश - प्रणाम प्रणाम, और बताइये क्या टैलेंट है, आप में । और आप का नाम काल पहेलियाँ क्यों रखा गया है ?

श्याम - मेरा पहला टैलेंट है, की मै होली के दिन रावण बनता हू और काल पहेलियाँ तो मेरा नाम अभी - अभी एक चिरकुट ने रखा है । और मै वेल्ली डांस अच्छा करता हू ।

राजेश - वाह पुत्तर वाह, मै कह रहा था न यही हमारा नाम रोशन करेगा, अबे उपेन्द्र कहाँ उपार रहा है, देख मै बोल रहा था न ?

उपेन्द्र - अबे, अभी टैलेंट तो देखने दे, चलिए श्याम जी फटाफट एक फड़कता हुआ वेल्ली आइटम डांस करके दिखाइए ।

श्याम -: सर वो दिलबर-दिलबर सांग बजा दीजिये ।

झंड दुनिया -: ओके, म्यूजिक !

और गाना बजना शुरू हो गया ।
श्याम का वेल्ली डांस देखने के बाद.....

राजेश -: अबे ऐसे नाचते है, वेल्ली डांस में कमर और पिछवाड़ा ज्यादा हिलना चाहिए वो तो हिला नहीं, अबे तुझसे भी कुछ नहीं होगा दूर हो जा मेरी नजरो से !

श्याम -: सर प्लीज एक मौका और दे दीजिये प्लीज, मुझे हीरो बनाने का और मौका दे दीजिये ।

उपेन्द्र -: अरे यार जाने दो, दे दो एक और मौका आखिरी बार कोशिश कर लेने दो ।

श्याम -: सर दो मिनट बॉथरूम से आने दीजिये ।

बॉथरूम से आने के बाद...

श्याम -: सर म्यूजिक !

झंड दुनिया - ओके !

उसके बाद श्याम ने धमाकेदार वेल्ले डांस किया ।

राजेश ने खुश होकर पूछा - अबे बॉथरूम मे कौन सी क्लास कर की जो तूने इतने अच्छी वेल्ली डांस किया ।

श्याम -: राजेश सर, आप चाहे तो मै आप को भी ये फार्मूला बता सकता हू ।

राजेश -: हा जरूर, तूही तो एकमात्र मेरा नाम रोशन करेगा हीहीही ।

श्याम -: बस सर आपको बॉथरूम तक चलना है, मेरे पास एक दवाई है, उसके उपयोग से एक नौसिखिया भी वेल्ली डांसर बन जाता है ।

झंड दुनिया -: अबे राजेश, मुझे कुछ गड़बड़ लग रही है ।

राजेश -: देख झंडू तुझे जलन हो रही है, ये बहुत ही सीधा-सीधा लड़का है, कुछ नहीं होगा ।

झंड दुनिया - फिर से सोच लियो, मुझे तो दाल में कुछ काला लग रियो है ।

राजेश -: अबे झंडू है तो तू एक कंप्यूटर, पर सोचता इंसानो की तरह, ठण्ड रख । श्याम तू चल बॉथरूम तक ।

थोड़ी देर बाद बॉथरूम से राजेश की चिल्लाने की आवाज आई, *अबे हरामखोर तो ये है, तेरा फार्मूला !*

चिल्लाते हुए बाहर आने के बाद ।

उपेन्द्र -: क्या हुआ बे ?

राजेश -: अबे, अब पता चला इसने इतनी जल्दी कैसे वेल्ली डांस सीख ली, हरामखोर कैसे कूद-कूद कर नाच रिया था ।

झंड दुनिया -: अबे पहेलियाँ मत बुझा साफ साफ बता हुआ क्या ?

राजेश -: साले ने बॉथरूम ले जा कर मेरी चड्डी खोलकर उसमे तीखी लाल मिर्च वाली सेज़वान चटनी भर दी, अबे अब मै समझा की इसने कैसे कूद -कूद कर इतनी जल्दी डांस कर ली ?

झंड दुनिया -: राजेश भाई पिछवाड़े में जलन हो रही छरछरा रहा है, अबे मैंने पहले ही बोला था दाल में काला है ।

राजेश -: अबे जब से जज बना हू, तबसे साले सब मेरे पीछे पड़े है । कोई काला रंग फेंकता है तो कोई पिछवाड़े में सेज़वान चटनी डालता है ! गॉर्ड इसे स्टूडियो से बाहर खदेड़ दो ।

झंड दुनिया - हूउउउ, निकल गई न सारी हेकड़ी, यही हमारा नाम रोशन करेगा ।

राजेश -: अबे विवेक अगले प्रतियोगी का नाम घोषित करो ।

तो भाइयो इस वक्त तो मुझे जज राजेश से डर लग रहा था, इसलिए मैंने फटाफट अगले प्रतियोगी बुला लिया ।

विवेक -: अब हमारे बीच अपने महान टैलेंट का परिचय देने आ रहे है Sudhakar Prajapati जो अपने पागलपन की हरकतों से मशहूर है, हर जगह अपने नाम का चद्दर फेंक देते है । क्या ये होली के हुड़दंग में जलवा दिखा पाएंगे ।

उपेन्द्र -: राजेश इनका ऑडिशन शुरू कीजिये ।

राजेश -: नहीं बे तूही कर मेरी अभी भी जल रही है, पिछवाड़े में आग लगी है, अभी भी बहुत जलन हो रही है अहह ।

उपेन्द्र -: लगता है, तेरी फट गई, अबे अभी तो सिर्फ चार ऑडिशन हुए हैं, अभी और नमूने है, सबको झेलना है ।

राजेश -: हां यार, रोजी रोटी का सवाल है, भुखमरी ऐसी चल रही है की क्या बताऊ ? चलो छोडो ये सब ऑडिशन शुरू करते है ।

राजेश -: हा तो सुधाकर जी क्या -क्या कर लेते है, आप ?

सुधाकर -: जी सर हम होली में चदरा बहुत अच्छा फेंक लेते है, भौजाइन के ऊपर और सर हम गाना बहुत अच्छा गा लेते है ।

झंड दुनिया -: देखो बेटा हम तो है सुपर कंप्यूटर, हमरी न कोई बीवी है तो ऐ हिसाब से तुहारी

कउनो भौजी भी नही होगी, एही दो लोग है राजेश और उपेन्द्र इन्ही लोग के मेहरु के चाहे तो भौजी बनाये के फेंक दो चद्दर, पर अभी ऑडिशन दो ।

उपेन्द्र -: ऐसा करो अभी कुछ सुनाओ ।

सुधाकर -: ए भौजी आवा
ए भौजी आवा
ए भौजी आवा तोहे खियाई चौमिनिया होली में
आवा तोहे खियाई चौमिनिया होली में ।

राजेश -: वाह पुत्तर वाह, फाड़ के रख दिया, धरती हिला के रख दी, क्या गाया है तूने ? तू जरूर सेलेक्ट हो जायेगा ।

सुधाकर -:धन्यवाद सर ।

उपेन्द्र -: पर बेटा होली में चौमिनिये क्यों खिलाया अपने भौजी को ? मटर टिक्का, चिकन टिक्का, चिकन बिरयानी, पनीर टिक्का, क्यों नहीं खिलाया ? चौमिनिये क्यों?

राजेश सर भी, उपेंद्र सर की हा में हा मिलाते है, हा पुत्तर चौमिनिये क्यों ? और कुछ नहीं ।

सुधाकर - सर अब वो मैं क्या बताऊ ? हीहीही मेरा चाउमीन का भोत बड़ा धंधा है, मेरा चाउमीन खाने के लिए भोत दूर दूर से लोग आते है, मंगल ग्रह तक से लोग आते है ।

राजेश -: क्या, मंगल ग्रह ?

उपेन्द्र -: ज्यादा फेक रहा है !

झंड दुनिया -: क्या, मंगल ग्रह ?

सुधाकर -: मेरा मतलब मंगोलिया से, मंगोलिया तक से लोग आते है, वो तो हीहीही जुबान फिसल गई ।

झंड दुनिया -: अच्छा बेटा ये तो तुम्हारा टैलेंट हो गया, अब बताओ होली पर क्या प्रोग्राम है ?

सुधाकर -: काम वही काम, चार बोतल वोडका, काम मेरा रोज का हीहीही ।

उपेन्द्र -: अबे मेरा मतलब होली में हुड़दंग कैसे करोगे ?

सुधाकर -: करना क्या है ? बस होली "चार बोतल वोडका काम मेरा रोज का " के बाद जो दोस्त मिलेंगे उन्हें, पटक पटक के रंग देंगे, और जो नहीं रंगेंगे, उन्हें उठा के नाले में पटक देंगे ।

झंड दुनिया -: तो ये है होली का प्रोग्राम !

सुधाकर -: जी सर जी ।

तभी सुधाकर को पागलपन का दौरा चढ़ने लगा और सुसुसु हा आ गए .....

आ गए साले मेरी मौत का तमाशा देखने, आओ देखो मुझे फांसी पर चढ़ा देंगे, मेरी आंखे बाहर निकल जाएगी, जुबान बाहर लटक जाएगी ।

राजेश -: अबे ये नाना पाटेकर की आवाज में क्यों बोल रहा है ?

उपेन्द्र -: अबे मुझे क्या पता ?

झंड दुनिया -: अबे मुझे पता है, इसे हर घंटे "नाना" नाम की बीमारी का दौरा पड़ता है, उसमे आदमी को हर घंटे नाना पाटेकर का डायलॉग आता है, और कभी कभी तो नाना पाटेकर की तरह फांसी पर भी लटक जाता है, और खल्लास हो जाता है ।

राजेश -: अबे इसे रोक, कही ये तिरंगा का नाना पाटेकर बनकर हम सबको गैंडा स्वामी समझकर ठोक न दे ।

झंड दुनिया -: ओये चिंता न कर गैंडे की तरह सिर्फ तू ही दिखता है, ये सिर्फ तुझे ही गैंडा स्वामी समझेगा ।

राजेश-: अबे मुझे बहुत डर लग रिया है, प्लीज कुछ कर यार, इसे डिसक्लिफाई करके बाहर निकाल ।

झंड दुनिया -: अबे गॉर्ड इसे उठा कर अस्पताल ले जाओ, कही ये हम से किसी का मर्डर न कर दे ।

उपेन्द्र -: अबे ये तो बड़ा ही खतरनाक बंदा था, ओये हैलो विवेक अबे क्या भोपू लेकर बोलू जल्दी से अगले प्रतियोगी को बुलाओ ।

विवेक -: तो दोस्तों जैसे की आप देख रहे है, मेरा मतलब यानि पढ़ रहे है की अभी तक हमारे कोई भी प्रतियोगी हमारे शो "होली का हुड़दंग " में ऑडिशन पास नहीं कर पाए है ! क्या आगे भी हमारे कोई प्रतियोगी परीक्षा पास कर पाएंगे ?

राजेश -: अबे विवेक तू इतनी बड़-बड़ क्यों करता है ? सीधे-सीधे प्रतियोगी क्यों नहीं बुलाता बे !
विवेक -: तो दोस्तों हमारे अगले प्रतियोगी है *Anup Soni* उर्फ़ टेक्निकल भैया । जिन्होंने यूट्यूब के माध्यम से एक आयाम कायम किया है, और हा दोस्तों अपने अभी तक इनका चैनल इनका चैनल सब्सक्राइब किया है तो अभी कीजिये ।

राजेश -: भाई गुरु जी है, Youtuber है, पर भाई का सिर नहीं दिखाई दे रहा है, कैमरा मैन जरा कैमरा ऊपर उठाना तो ।

कैमरा मैन -: राजेश सर कैमरा इससे ऊपर नहीं जा सकता है, और इनकी लम्बाई की वजह से इनका सिर यानि चेहरा कैमरा में नहीं आ सकता है ।

राजेश -: अबे क्या मुसीबत है ? अबे थोड़ा कैमरा एडजेस्ट कर लेना ।

कैमरामैन -: सर अगर ये थोड़ा आलथी-पालथी मार के बैठ जाये तो शायद इनका चेहरा कैमरे में आने लगे ।

राजेश -: भैया जी, कृपा थोड़ा कष्ट करे हीहीही, कैमरामैन की बात तो अपने सुन ली, आप बैठ के ऑडिशन दीजिये तो बेहतर होगा ।

झंड दुनिया -: हा तो अनूप जी बताइये आप अभी गुरु जी से हीरो क्यों बनना चाहते है ? आप कब से महसूस कर रहे है, की आप हीरो बन सकते है ?

अनूप -: वो क्या है सर, पहले मैंने पॉलीवूड में ऑडिशन दिया था, पर सिलेक्शन नहीं हो पाया । इसलिए सोचा इस बार मै भोजपुरी शो "होली का हुड़दंग" में ऑडिशन दू और पास हो जाऊ ।

उपेन्द्र -: तो बताइये आप क्या कर सकते है ?

अनूप -: सर देखिये मै पहले मै सेना में भी था ।

राजेश -: सेना में कब ?

अनूप -: पबजी गेम में । जी पबजी खेलने में मेरा कोई जवाब नहीं । इस गेम में मैंने सबकी छुट्टी कर दी मुझसे कोई जीत नहीं सकता, मै विश्वविजेता हू, त्रिलोक विजेता हू, धरती, आकाश, पताल सबका विश्वविजेता हू, मै सम्राट हू ।

झंड दुनिया -: अबे बस कर, तू तो पौराणिक काल के राक्षसों की तरह डिंगे हाकने लगा, होली कैसे मनाएंगा गुर्र गुर्र हीहीही ?

अनूप -: हीहीही, बस करना कुछ नहीं, दुइ बाल्टी रंग घोरेन्गे ले जाये के किसी के ऊपर फेंक देंगे होइ जाई होली, अइसे ही तो होली मनावत है । और हा ऊपर से बाबा भोलेनाथ का प्रसाद मिल जाये तो बात ही अलग है ।

राजेश -: अबे टैलेंट क्या है ? कुछ गा बजा सकता है की नहीं , नाच-वाच सकता है ।

अनूप -: जी बिल्कूल मै डांस कर सकता हू ।

झंड दुनिया -: (गुस्से में) तो भाई चलो नाच कर दिखाओ ।

अनूप -: जी अवश्य ।

और अनूप जी, जो अभी तक पालथी मार कर बैठे थे, उनके खड़े होकर नाचने पर कैमरे से फिर उनका सिर गायब हो गया ।

राजेश -: एक मिनट... डांस अभी रोको, अरे यार कैमरे में फिर वही चेहरा नहीं आने की दिक्कत ।

साला ये मेरी जिन्दंगी में बार-बार क्यों लरप-लरप चोप-चोप हो जाता है । भाई अनूप आप अभी ऑडिशन नहीं दे सकते क्योकि आपकी लम्बाई की वजह से आप कैमरे से बाहर हो जा रहे है, तो अभी के लिए प्लीज जाइये, जब आपके साइज का कैमरा आ जायेगा तब आपको फिर बुला लिया जायेगा ।

अनूप - सर वो तो ठीक है , पर इसका क्या मतलब था ? लरप-लरप चोप-चोप गचर-गचर !

झंड दुनिया -: भाई ये बात तो मुझ जैसे सुपर कंप्यूटर को समझ न आई तो तुझे कैसे आएगी ?

विवेक अगले प्रतियोगी को बुलाया जाये ।

विवेक -: OK सर ।

झंड दुनिया -: अबे तू इतनी पगलइती क्यों करता है ? सीधा प्रतियोगी को बुला न ।

विवेक -: जी सर । तो दोस्तों इस बार हमारे बीच आ रहे है, *Yash Kashyap* जो अपनी छिछोरी हरकतों से जाने जाते है । सड़क चलते छेड़ना इनके लिए एक फैशन हो गया । आइये अब हम इस महान आत्मा का ऑडिशन लेते है ।

राजेश -: बेटा क्या सुन रहे है हम । छिछोरापांति में तुमने हद कर दी है ।

झंड दुनिया -: मेरे कंप्यूटर में जो डेटा है, वो भी यही कह रहा है, ये बहुत बड़ा छिनरा है ।

उपेन्द्र -: राजेश बच के रहियो, कही तुम्हारी लरप-लरप चोप-चोप न कर दे ।

राजेश -: अच्छा छोड़ो ये बताओ क्या टैलेंट है तुम्हारा ? क्या उखाड़ सकते हो ?

यश कश्यप -: जी बिलकुल मैं घास अच्छी तरह उखाड़ लेता हू हीहीही ।

राजेश -: अबे बहरा है क्या ? मैं पूंछ रेला हू, की तुझमे टैलेंट क्या है, ऑडिशन में क्या दिखा सकता है ?

यश -: सर जैसा अपने मेरे बारे में सुना है, की छिछोरपंती अच्छी तरह से कर लेता हू, ऐसी कोई छोकरी नहीं है, जो मेरे ताडने से बच कर निकल जाये, कहिये तो मैं आपको छेड़कर दिखाऊ ।

झंड दुनिया -: अबे मैं कंप्यूटर हू, मुझे तो छेड़ने के बारे सोचियो भी मत ! ये राजेश और उपेन्द्र है इन्हे ही छेड़ ।

राजेश -: चल हा, हमें छेड़कर दिखा, कैसे छेड़ता है तू ?

यश -: जी सर ।

अब यश राजेश के पास जाकर उंगली से छूते हुए बोलता है - *हाय छमिया किधर जा री हो, जानेमन हिचकया हिचकया अउ ।*

राजेश -: अबे ये तुझमे शक्ति कपूर क्यों समां रहा है ?

यश -: सर अभी कॅरेक्टर में कहाँ घुसा हू ? अभी तो बाकी है ।

उपेन्द्र - अब इसका भी यही लरप-लरप चोप-चोप यही कर दोगे ।

यश -: सर ये लरप-लरप चोप-चोप क्या है ?

राजेश - कुछ नहीं बे बिगड़ जायेगा तू, क्या करेगा तू जान करके ? और बे मुझे अब तुझसे डर लग रिया है, कही तुझमे वाकई में शक्ति कपूर समां गया तो तू यही हम सबको लूट लेगा । बाहर के तरफ जा, अभी तेरे बारे में बाद में सोचेंगे ।

और विवेक तू अगले दो प्रतियोगी को बुला, लरप -लरप,चोप चोप गचर-गचर ।

तो दोस्तों हमारे ये प्रतियोगी भी जजेस की उम्मीदों पर खरे नहीं उतरे, मुझे लगता ही की हमारा शो शुरू होने से पहले ही बंद हो जायेगा ।

झंड दुनिया - अबे वो विवेक शो बंद हो जायेगा, अबे बड़ी मुश्किल से नौकरी मिली है, बीड़ी पिने के पैसे नहीं थे तेरे पास, वो तो हमने तुझे दारू पिने के पैसे दिए । चल फटाक से अगले प्रतियोगी को बुला ।

विवेक -: हमारे अगले प्रतियोगी है, 8 फ़ीट लम्बे और लगभग 5 फ़ीट चौड़े महाराष्ट्र की शान *Prashant Kadam* ।

राजेश -: तो प्रशांत जी बताइये आपमें क्या टैलेंट है, इस बार आप होली कैसे मनाएंगे ?

प्रशांत -: सर मेरा टैलेंट है क्रिकेट, क्रिकेट मैं इतना अच्छा खेलता हू की पूछिए मत । लोग सिक्स मारते है, मैं सीधा 12 रन मरता हू ।

राजेश -: अबे 12 रन कैसे मार सकता है ? 6 रन के बाद 12 रन असंभव !

प्रशांत -: देखिये सर, सीधा सा हिसाब है, जाता 6 ही रन है, पर मोहल्ले के जो लड़के इसे 12 रन नहीं मानते है, उन्हें भी मैं इसे बाल के साथ बांध कर फेंक देता हू, और जब वो लौट के आता है तो खुद इसे 12 रन मान लेता है हीहीही ।

उपेन्द्र -: अच्छा होली, होली कैसे मनाओगे ?

प्रशांत -: सर करना क्या है, बैट की जगह पिचकारी और गेंद की जगह रंग वाले गुब्बारे होंगे हीहीही उसी से ही लरप -लरप चोप चोप कर दूंगा ।

राजेश -: अबे ये लरप-लरप चोप-चोप मेरी लाइन है, इसपे मेरा कॉपीराइट है ।

झंड दुनिया -: कुछ और सुना दो जिससे हम ये फैसला कर सके की तुम हीरो बनाने के लायक हो ।

प्रशांत -: सर मुझे क्रिकेट के आलावा और कुछ नहीं आता, मुझे शो में खिलाडी का ही रोल दे दीजिये हीहीही ।

उपेन्द्र -: पुत्तर तू बाहर का रास्ता देख, ये ऑडिशन तेरे लिए नहीं था । तू गलत जगह आ गया, अरे वर्ल्ड कप शुरू होने वाला है, आईपीएल शुरू हो गया है वह जाकर ऑडिशन दे तू पक्का सेलेक्ट हो जायेगा ।

प्रशांत -: मैं सच में सेलेक्ट हो जाऊंगा ।

झंड दुनिया -: हा तू सच में सेलेक्ट हो जायेगा ।

और इसी के साथ अपने प्रशांत भाई खुश होकर स्टूडियो से चले आये ।

झंड दुनिया -: अबे विवेक शक्ल मत देख उस आखिरी वाले प्रतियोगी को बुला ।

विवेक -: जी हुजूर, तो दोस्तों अब हमारे सामने पेश Rajkumar Agrahari वैसे जब इतने सारे प्रतियोगी कुछ नहीं उखाड़ पाए तो ये क्या उखाड़ेंगे होली में ? खैर इन्हे भी कोशिश कर ही लेने देते है ।

राजेश -: तो बताइये राजू जी आपमें क्या टैलेंट है, और ये आप हाथ रिंच, पेलाश, पेचकस लेकर सेना की वर्दी में क्यों आये है ?

राजकुमार -: सर वो क्या है ? बहुत समय पहले हम फ़ौज में थे, फिर इंजीनियर हुए, और अब सोच रहे है हीरो भी बन जाये ।

उपेन्द्र -: ओह ठीक आप हीरो बन सकते है, बताइये होली में कैसे हुड़दंग करते है ? नाचना वाचना आता है कि नहीं ।

राजकुमार -: जी बिलकुल आता है, बारात में जब दूर-दूर तक कोई नहीं नाचता है, तब हम ही तो सबसे पहले मोर्चा थामते है । डीजे वाले का पैसा बर्बाद नहीं होने देते है, पूरा पैसा वसूलने तक नाचते है ।

झंड दुनिया -: तो चलो दिखाओ, नाच के दिखाओ ।

राजकुमार -: जी (थोड़ी देर में बाराती डांस करने के बाद)

राजेश -: अबे ये क्या डांस है ? सानिया की बारात में डांस करने आया है, ऐसे डांस करते है । अबे मेरा लठ किधर है, ला दे खोपड़ी तोड़ू मैं इसकी ।

और दोस्तों लठ का नाम सुनते ही राजू वहां से फरार हो गया, और सीधा रांची झारखण्ड जाकर रुका, और कभी- कभी हम लोगो से मिलने चला आता है ।

दोस्तों इसी के साथ हमारा ऑडिशन यही समाप्त होता है,और दोस्तों अगर आपको कुछ गलत लगे तो प्लीज होली का सीजन है| बुरा न मनो होली है, कहकर आगे निकल जाना ।

और मेरे सभी दोस्तों को होली बहुत -बहुत बधाईया |

SINGH COMICS
अकीरा...जिसका जन्म ही बुराई के नाश के लिए हुआ है, कैसे बनी शिव पुत्री ? कैसे तय करेगी वह द्वापरयुग से कलयुग तक का सफ़र। ऐसे कई प्रश्नों के उत्तर अपने प्रथम अंक उत्पत्ति में लेकर लौटेगी...
लेखक
हुकम महेन्द्रा
अकीरा
सिंह कॉमिक्स की प्रस्तुति
ad art by
singh balbinder

अपकॉमिंग कॉमिक्स
तलाश
नैना
https://ComicsJunction.Stck.Me
अधिक जानकारी के लिए कॉमिक्स जंक्शन YouTube चैनेल ज्वांइन करे ।

ज़ेनस्कोप
कॉमिक्स
08
(HDC)
परी चुड़ैल की जादुई कथाएं
वैन हेलसिंग
ड्रैकुला
राजसी
कष्ट
राज सिहँ
www.hdchindi.blogspot.com

इस सृष्टि के निर्माण से पहले अगर कुछ था तो वह था 'अंधकार' और आगे भी 'अंधकार' ही होगा। अवेंजर्स, जस्टिस लीग और ब्रह्माण्ड रक्षक , ये सब तो उस अंधकार को पुनः लाने के लिए मेरे हाथों की एक कठपुतली मात्र हैं। इस सृष्टि का विनाश करके अंधेरे की अपनी एक नई सृष्टि बनाऊंगा क्योंकि बहुत जल्द पुनः होने वाला है इस धरती पर ...

टीम FMC की प्रस्तुति

Advent of Darkness

कथा, संवाद एवं एडिटिंग
हुकम महेन्द्रा